ये पत्र इन्दिरा को लिखे गए थे इसलिए
इन्हें उसीकी भेंट करता हूँ

# दो शब्द

तीन बरस हुए मैंने ये खत अपनी पुत्री इन्दिरा को लिखे थे। वह उस समय मसूरी में हिमालय पर थी और मैं इलाहाबाद में था। वह दस वर्ष की थी और ये खत उसी के लिए लिखे गये थे और किसी और का खयाल नही था। लेकिन फिर बाद में बहुत मित्रो ने मुझे राय दी कि मै इनको छपवाऊँ ताकि और लडके और लडकियाँ भी इनको पढें।

पत्र अग्रेज़ी भाषा में लिखे गये थे और करीब दो वर्ष हुए अग्रेज़ी में छपे भी थे। मुझे आशा थी कि हिन्दी में भी जल्दी निकलें लेकिन और कामो में मै फँसा रहा और कई कठिनाइयाँ पेश आ गईं इसलिए देर हो गई।

ये खत एकाएक खतम हो जाते हैं। गर्मी का मौसम खतम हुआ और इन्दिरा पहाड से उतर आई। फिर ऐसे खत लिखने का मौका मुझे नही मिला। उसके बाद के साल वह पहाड नही गई और दो बरस बाद १९३० में मुझे नैनी की—जो पहाड नही है—यात्रा करनी पडी। नैनी जेल में कुछ और पत्र मैंने इदिरा को लिखे लेकिन वे भी अधूरे रह गए और मैं छोड़ दिया गया। ये नए खत इस किताब में शामिल नही हैं। अगर मुझे बाद में कुछ और लिखने का मौका मिला तब शायद वे भी छापे जावें।

मुझे मालूम नही कि लडके और लड़कियाँ इन खतो को पसन्द करेंगे या नही। पर मुझे आशा है कि जो इनको पढ़ेंगे वे इस हमारी दुनिया और उसके रहने वालो को एक बडा कुटुम्ब समझेंगे। और जो भिन्न-भिन्न देशो के रहने वालो में वैमनस्य और दुश्मनी है वह उनमें नही होगी।

इन अग्रेज़ी पत्रो का हिंदी में अनुवाद श्री प्रेमचद जी ने किया है और उनका मैं बहुत मशकूर हूँ।

आनंदभवन,
६ जूलाई, १९३१

जवाहरलाल नेहरू

# विषय-सूची

: १ :

# संसार पुस्तक है

जब तुम मेरे साथ रहती हो तो अकसर मुझसे बहुत सी बातें पूछा करती हो और मैं उनका जवाब देने की कोशिश करता हूँ। लेकिन अब, जब तुम मसूरी में हो और मैं इलाहाबाद में, हम दोनों उस तरह बातचीत नहीं कर सकते। इसलिए मैंने इरादा किया है कि कभी-कभी तुम्हें इस दुनिया की और उन छोटे बड़े देशों की जो इस दुनिया में हैं छोटी-छोटी कथायें लिखा करूँ। तुमने हिन्दुस्तान और इंगलैण्ड का कुछ हाल इतिहास में पढ़ा है। लेकिन इंगलैण्ड केवल एक छोटा सा टापू है और हिन्दुस्तान, जो एक बहुत बड़ा देश है, फिर भी दुनिया का एक छोटा सा हिस्सा है। अगर तुम्हें इस दुनिया का कुछ हाल जानने का शौक है, तो तुम्हें सब देशों का, और उन सब जातियों का जो इसमें बसी हुई हैं ध्यान रखना पड़ेगा, केवल उस एक छोटे से देश का नहीं जिसमें तुम पैदा हुई हो।

मुझे मालूम है कि इन छोटे-छोटे ख़तों में मैं बहुत थोड़ी सी बातें ही बतला सकता हूँ। लेकिन मुझे आशा है कि इन थोड़ी सी बातों को भी तुम शौक़ से पढ़ोगी और समझोगी कि दुनिया एक है और दूसरे लोग जो इसमें आबाद हैं हमारे भाई-बहन हैं। जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम दुनिया और उसके आदमियों का हाल मोटी-मोटी किताबों में पढ़ोगी। उसमें तुम्हें

जितना आनन्द मिलेगा उतना किसी कहानी या उपन्यास में भी न मिला होगा।

यह तो तुम जानती ही हो कि यह धरती लाखों करोड़ों बरस की पुरानी है, और बहुत दिनों तक इसमें कोई आदमी न था। आदमियों के पहले सिर्फ़ जानवर थे, और जानवरों के पहले एक ऐसा समय था जब इस धरती पर कोई जानदार चीज़ न थी। आज जब यह दुनिया हर तरह के जानवरों और आदमियों से भरी हुई है, उस ज़माने का ख़्याल करना भी मुश्किल है जब यहाँ कुछ न था। लेकिन विज्ञान जानने वालों और विद्वानों ने, जिन्होंने इस विषय को खूब सोचा और पढ़ा है, लिखा है कि एक समय ऐसा था जब यह धरती बेहद गर्म थी और इसपर कोई जानदार चीज़ नहीं रह सकती थी। और अगर हम उनकी किताबें पढ़ें और पहाड़ों और जानवरों की पुरानी हड्डियों को ग़ौर से देखें तो हमें खुद मालूम होगा कि ऐसा समय ज़रूर रहा होगा।

तुम इतिहास किताबों में ही पढ़ सकती हो। लेकिन पुराने ज़माने में तो आदमी पैदा ही न हुआ था, किताबें कौन लिखता? तब हमें उस ज़माने की बातें कैसे मालूम हों? यह तो नहीं हो सकता कि हम बैठे-बैठे हर एक बात सोच निकालें। यह बड़े मज़े की बात होती, क्योंकि हम जो चीज चाहते सोच लेते, और सुन्दर परियों की कहानियाँ गढ़ लेते। लेकिन जो कहानी किसी बात को देखे बिना ही गढ़ ली जाय वह कैसे ठीक हो सकती है?

लेकिन खुशी की बात है कि उस पुराने जमाने की लिखी हुई किताबें न होने पर भी कुछ ऐसी चीजें हैं जिनसे हमें उतनी ही बातें मालूम होती हैं जितनी किसी किताब से होतीं। ये पहाड़, समुद्र, सितारे, नदियाँ, जंगल, जानवरों की पुरानी हड्डियाँ और इसी तरह की और भी कितनी ही चीजें वे किताबें हैं जिनसे हमें दुनिया का पुराना हाल मालूम हो सकता है। मगर हाल जानने का असली तरीका यह नहीं है कि हम केवल दूसरों की लिखी हुई किताबें पढ़ लें, बल्कि खुद संसार-रूपी पुस्तक को पढ़ें। मुझे आशा है कि पत्थरों और पहाड़ों को पढ़कर तुम थोड़े ही दिनों में उनके हाल जानना सीख जाओगी। सोचो, कितनी मज़े की बात है! एक छोटा सा रोड़ा जिसे तुम सड़क पर या पहाड़ के नीचे पड़ा हुआ देखती हो, शायद संसार की पुस्तक का छोटा सा पृष्ठ हो, शायद उससे तुम्हें कोई नई बात मालूम हो जाय। शर्त यही है कि तुम्हें उसे पढ़ना आता हो। कोई जबान, उर्दू, हिन्दी या अंग्रेज़ी, सीखने के लिए तुम्हें उसके अक्षर सीखने होते हैं। इसी तरह पहले तुम्हें प्रकृति के अक्षर पढ़ने पड़ेंगे, तभी तुम उसकी कहानी उसकी पत्थरों और चट्टानों की किताब से पढ़ सकोगी। शायद अब भी तुम उसे थोड़ा-थोड़ा पढ़ना जानती हो। जब तुम कोई छोटा सा गोल चमकीला रोड़ा देखती हो, तो क्या वह तुम्हें कुछ नहीं बतलाता? यह कैसे गोल, चिकना और चमकीला हो गया और उसके खुरदरे किनारे या कोने क्या हुए? अगर तुम किसी बड़ी चट्टान को तोड़कर टुकड़े-

टुकड़े कर डालो तो हर एक टुकड़ा खुरदरा और नोकीला होगा। यह गोल चिकने रोड़े की तरह बिलकुल नहीं होता। फिर यह रोड़ा कैसे इतना चमकीला, चिकना और गोल हो गया? अगर तुम्हारी आँखें देखें और कान सुनें तो तुम उसी के मुँह से उसकी कहानी सुन सकती हो। वह तुमसे कहेगा कि एक समय, जिसे शायद बहुत दिन गुज़रे हों, वह भी एक चट्टान का टुकड़ा था। ठीक उसी टुकड़े की तरह, उसमें किनारे और कोने थे, जिसे तुम बड़ी चट्टान से तोड़ती हो। शायद वह किसी पहाड़ के दामन में पड़ा रहा। तब पानी आया और उसे बहाकर छोटी घाटी तक ले गया। वहाँ से एक पहाड़ी नाले ने ढकेल कर उसे एक छोटे से दरिया में पहुँचा दिया। इस छोटे दरिया से वह बड़े दरिया में पहुँचा। इस बीच में वह दरिया के पेंदे में लुढ़कता रहा, उसके किनारे घिस गए और वह चिकना और चमकदार हो गया। इस तरह वह कंकड़ बना जो तुम्हारे सामने है। किसी वजह से दरिया उसे छोड़ गया और तुम उसे पा गईं। अगर दरिया उसे और आगे ले जाता तो वह छोटा होते-होते अंत में बालू का एक ज़र्रा हो जाता और समुद्र के किनारे अपने भाइयों से जा मिलता, जहाँ एक सुन्दर बालू का किनारा बन जाता, जिस पर छोटे-छोटे बच्चे खेलते और बालू के घरोंदे बनाते।

अगर एक छोटा सा रोड़ा तुम्हें इतनी बातें बता सकता है, तो पहाड़ों और दूसरी चीजों से, जो हमारे चारों तरफ हैं, हमें और कितनी बातें मालूम हो सकती हैं!

: २ :

## शुरू का इतिहास कैसे लिखा गया

अपने पहले पत्र में मैंने तुम्हें बताया था कि हमें संसार की किताब से ही दुनिया के शुरू का हाल मालूम हो सकता है। इस किताब में चट्टान, पहाड़, घाटियाँ, नदियाँ, समुद्र, ज्वालामुखी और हर एक चीज़, जो हम अपने चारों तरफ देखते हैं, शामिल हैं। यह किताब हमेशा हमारे सामने खुली रहती है। लेकिन बहुत ही थोड़े आदमी इस पर ध्यान देते; या इसे पढ़ने की कोशिश करते हैं। अगर हम इसे पढ़ना और समझना सीख लें, तो हमें इसमें कितनी ही मनोहर कहानियाँ मिल सकती हैं। इसके पत्थर के पृष्ठों में हम जो कहानियाँ पढ़ेंगे वे परियों की कहानियों से कहीं सुन्दर होंगी।

इस तरह संसार की इस पुस्तक से हमें उस पुराने जमाने का हाल मालूम हो जायगा जब कि हमारी दुनिया में कोई आदमी या जानवर न था। ज्यों-ज्यों हम पढ़ते जायेंगे हमें मालूम होगा कि पहिले जानवर कैसे आए और उनकी तादाद कैसे बढ़ती गई। उनके बाद आदमी आए; लेकिन वे उन आदमियों की तरह न थे, जिन्हें हम आज देखते हैं। वे जंगली थे और जानवरों में और उनमें बहुत कम फर्क था। धीरे-धीरे उन्हें तजरुबा हुआ और उनमें सोचने की ताकत आई। इसी ताक़त ने उन्हें जानवरों से अलग कर दिया। यह असली ताकत थी जिसने उन्हें



खान से निकला हुआ पौधा जो पत्थर सा हो गया है

बड़े से बड़े और भयानक से भयानक जानवरों से ज़्यादा बलवान बना दिया। तुम देखती हो कि एक छोटा सा आदमी एक बड़े हाथी के सिर पर बैठकर उससे जो चाहता है करा लेता है। हाथी बड़े डील डौल का जानवर है, और उस महावत से कहीं ज़्यादा बलवान है, जो उसकी गर्दन पर सवार है। लेकिन महावत में सोचने की ताकत है और इसी की बदौलत वह मालिक है और हाथी उसका नौकर। ज्यों-ज्यों आदमी में सोचने की ताक़त बढ़ती गई, उसकी सूझ भी बढ़ती गई। उसने बहुत सी बातें सोच निकालीं। आग जलाना, ज़मीन जोत कर खाने की चीज़ें पैदा करना, कपड़ा बनाना और पहिनना, और रहने के लिए घर बनाना, ये सभी बातें उसे मालूम हो गईं। बहुत से आदमी मिलकर एक साथ रहते थे और इस तरह पहिले शहर बने। शहर बनने के पहिले लोग जगह-जगह घूमते फिरते थे और शायद किसी तरह के खेमों में रहते होंगे। तबतक उन्हें जमीन से खाने की चीजें पैदा करने का तरीक़ा नहीं मालूम था। न उनके पास चावल थे, न गेहूँ जिससे रोटियाँ बनती हैं। न तो तरकारियाँ थीं और न दूसरी चीजें जो हम आज खाते हैं। शायद कुछ फल और बीज उन्हें खाने को मिल जाते हों मगर ज़्यादातर वे जानवरों को मारकर उनका मांस खाते थे।

ज्यों-ज्यों शहर बनते गए लोग तरह-तरह की सुन्दर कलायें सीखते गए। उन्होंने लिखना भी सीखा। लेकिन बहुत दिनों तक लिखने को काग़ज न था, और लोग भोजपत्र या ताड़ के

पत्तों पर लिखते थे। आज भी बाज़ पुस्तकालयों में तुम्हें समूची किताबें मिलेंगी जो उसी पुराने ज़माने में भोजपत्र पर लिखी गई थीं। तब कागज़ बना और लिखने में आसानी हो गई। लेकिन छापेखाने न थे और आजकल की भाँति किताबें हज़ारों की तादाद में न छप सकती थीं। कोई किताब जब लिख ली जाती थी तो बड़ी मिहनत के साथ हाथ से उसकी नकल की जाती थी। ऐसी दशा में किताबें बहुत न थीं। तुम किसी किताब बेचनेवाले की दूकान पर जा कर चटपट किताब न खरीद सकतीं। तुम्हें किसी से उसकी नकल करानी पड़ती और उसमें बहुत समय लगता। लेकिन उन दिनों लोगों के अक्षर बहुत सुन्दर होते थे और आज भी पुस्तकालयों में ऐसी किताबें मौजूद हैं, जो हाथ से बहुत सुन्दर अक्षरों में लिखी गई थीं। हिन्दुस्तान में खास कर संस्कृत, फारसी और उर्दू की किताबें मिलती हैं। अकसर नकल करनेवाले पृष्ठों के किनारों पर सुन्दर बेलबूटे बना दिया करते थे।

शहरों के बाद धीरे-धीरे देशों और जातियों की बुनियाद पड़ी। जो लोग एक मुल्क में पास पास रहते थे उनका एक दूसरे से मेलजोल हो जाना स्वाभाविक था। वे समझने लगे कि हम दूसरे मुल्क वालों से बढ़-चढ़ कर हैं और बेवकूफ़ी से उनसे लड़ने लगे। उनकी समझ में यह बात न आई, और आज भी लोगों की समझ में नहीं आ रही है कि लड़ने और एक दूसरे की जान लेने से बढ़कर बेवकूफ़ी की बात और

कोई नहीं हो सकती। इससे किसी को फ़ायदा नहीं होता।

जिस ज़माने में शहर और मुल्क बने उसकी कहानी जानने के लिए पुरानी किताबें कभी-कभी मिल जाती हैं। लेकिन ऐसी किताबें बहुत नहीं हैं। हाँ, दूसरी चीजों से हमें मदद मिलती है। पुराने ज़माने के राजे-महाराजे अपने समय का हाल पत्थर के टुकड़ों और खंभों पर लिखवा दिया करते थे। किताबें बहुत दिन नहीं चल सकतीं। उनका काग़ज बिगड़ जाता है। और उसे कीड़े खा जाते हैं। लेकिन पत्थर बहुत दिन चलता है। शायद तुम्हें याद होगा कि तुमने इलाहाबाद के किले में अशोक की बड़ी लाट देखी है। कई सौ साल हुए अशोक हिन्दुस्तान का एक बड़ा राजा था। उसने उस खंभे पर अपना एक आदेश खुदवा दिया है। अगर तुम लखनऊ के अजायबघर में जाओ, तो तुम्हें बहुत से पत्थर के टुकड़े मिलेंगे जिन पर अक्षर खुदे हैं।

संसार के देशों का इतिहास पढ़ने लगोगी तो तुम्हें उन बड़े-बड़े कामों का हाल मालूम होगा जो चीन और मिस्रवालों ने किये थे। उस समय यूरोप के देशों में जंगली जातियाँ बसती थीं। तुम्हें हिन्दुस्तान के उस शानदार ज़माने का हाल भी मालूम होगा जब रामायण और महाभारत लिखे गए और हिन्दुस्तान बलवान और धनवान देश था। आज हमारा मुल्क बहुत ग़रीब है और एक विदेशी जाति हमारे ऊपर राज कर रही है। हम अपने ही मुल्क में आजाद नहीं हैं और जो कुछ

करना चाहें नहीं कर सकते। लेकिन यह हाल हमेशा नहीं थ और अगर हम पूरी कोशिश करें तो शायद हमारा देश फि आज़ाद हो जाय, जिससे हम गरीबों की दशा सुधार सकें औ हिन्दुस्तान में रहना उतना ही आरामदेह हो जाय, जितना कि आज यूरप के कुछ देशों में है।

मैं अपने अगले खत में संसार की मनोहर कहानी शुरू से लिखना आरंभ करूँगा।

: २ :

## ज़मीन कैसे बनी

तुम जानती हो कि ज़मीन सूरज के चारों तरफ़ घूमती है और चाँद ज़मीन के चारों तरफ घूमता है। शायद तुम्हें यह भी याद है कि ऐसे और भी कई गोले हैं जो ज़मीन की तरह सूरज का चक्कर लगाते हैं। ये सब, हमारी जमीन को मिलाकर, सूरज के ग्रह कहलाते हैं। चाँद ज़मीन का उपग्रह कहलाता है; इस-लिए कि वह ज़मीन के ही आसपास रहता है। दूसरे ग्रहों के भी अपने-अपने उपग्रह हैं। सूरज उसके ग्रह और ग्रहों के उपग्रह मिलकर मानों एक सुखी परिवार बन जाता है। इस परिवार को सौर जगत कहते हैं। सौर का अर्थ है सूरज का। सूरज इन सब ग्रहों और उपग्रहों का बाबा है। इसीलिए इस परिवार को सौर जगत कहते हैं।

रात को तुम आसमान में हजारों सितारे देखती हो। इनमें से थोड़े से ही ग्रह हैं और बाकी सितारे हैं। क्या तुम बता सकती हो कि ग्रह और तारे में क्या फ़र्क़ है? ग्रह हमारी जमीन की तरह सितारों से बहुत छोटे होते हैं लेकिन आसमान में वे बड़े नज़र आते हैं, क्योंकि जमीन से उनका फ़ासला कम है। ठीक ऐसा ही समझो जैसे चाँद, जो बिलकुल बच्चे की तरह है, हमारे नज़दीक होने की वजह से इतना बड़ा मालूम होता है। लेकिन सितारों और ग्रहों के पहिचानने का असली तरीक़ा यह है कि वे जगमगाते हैं या नहीं। सितारे जगमगाते हैं, ग्रह नहीं जगमगाते। इसका सबब यह है कि ग्रह सूर्य की रोशनी से चमकते हैं। चाँद और ग्रहों में जो चमक हम देखते हैं वह धूप की है। असली सितारे बिलकुल सूरज की तरह हैं; वे बहुत गर्म जलते हुए गोले हैं जो आप ही आप चमकते हैं। दरअसल सूरज खुद एक सितारा है। हमें यह बड़ा आग का गोला सा मालूम होता है, इसलिए कि ज़मीन से उसकी दूरी और सितारों से कम है।

इससे अब तुम्हें मालूम हो गया कि हमारी ज़मीन भी सूरज के परिवार में—सौर जगत में—है। हम समझते हैं कि जमीन बहुत बड़ी है और हमारे जैसी छोटी सी चीज को देखते हुए वह है भी बहुत बड़ी। अगर किसी तेज़ गाड़ी या जहाज पर बैठो तो इसके एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक जाने में हफ़्तों और महीनों लग जाते हैं। लेकिन हमें चाहे यह कितनी ही बड़ी दिखाई दे असल में यह धूल के एक कण की तरह हवा में

लटकी हुई है। सूरज ज़मीन से करोड़ों मील दूर है और दूसरे सितारे इससे भी ज़्यादा दूर हैं।

ज्योतिषी या वे लोग जो कि सितारों के बारे में बहुत सी बातें जानते हैं हमें बतलाते हैं कि बहुत दिन पहिले हमारी ज़मीन और सारे ग्रह सूर्य ही में मिले हुए थे। आजकल की तरह उस समय भी सूरज जलती हुई धातु का निहायत गर्म गोला था। किसी वजह से सूरज के छोटे-छोटे टुकड़े उससे टूटकर हवा में निकल पड़े। लेकिन वे अपने पिता सूर्य से बिलकुल अलग न हो सके। वे इस तरह सूर्य के गिर्द चक्कर लगाने लगे, जैसे उनको किसी ने रस्सी से बाँध रक्खा हो। यह विचित्र शक्ति जिसकी मैंने रस्सी से मिसाल दी है एक ऐसी ताकत है जो छोटी चीज़ों को बड़ी चीज़ों की तरफ़ खींचती है। यह वही ताक़त है, जो वज़नदार चीज़ों को ज़मीन पर गिरा देती है। हमारे पास ज़मीन ही सबसे भारी चीज़ है, इसीसे वह हर एक चीज़ को अपनी तरफ खींच लेती है।

इस तरह हमारी ज़मीन भी सूरज से निकल भागी थी। उस ज़माने में यह बहुत गर्म रही होगी; इसके चारों तरफ की हवा भी बहुत ही गर्म रही होगी लेकिन सूरज से बहुत ही छोटी होने के कारण वह जल्द ठंडी होने लगी। सूरज की गर्मी भी दिन-दिन कम होती जा रही है लेकिन उसे बिलकुल ठंडे हो जाने में लाखों बरस लगेंगे। ज़मीन के ठंडे होने में बहुत थोड़े दिन लगे। जब यह गर्म थी तब इस पर कोई जानदार चीज़

जैसे आदमी, जानवर, पौधा या पेड़ न रह सकते थे। सब चीजें जल जाती थीं।

जैसे सूरज का एक टुकड़ा टूटकर ज़मीन हो गया इसी तरह ज़मीन का एक टुकड़ा टूटकर निकल भागा और चाँद हो गया। बहुत से लोगों का खयाल है कि चाँद के निकलने से जो गड्ढा हो गया वह अमरीका और जापान के बीच का प्रशांत-सागर है। मगर ज़मीन को ठंडे होने में भी बहुत दिन लग गए। धीरे धीरे ज़मीन की ऊपरी तह तो ज़्यादा ठंडी हो गई लेकिन उसका भीतरी हिस्सा गर्म बना रहा। अब भी अगर तुम किसी कोयले की खान में घुसो, तो ज्यों-ज्यों तुम नीचे उतरोगी गर्मी बढ़ती जायगी। शायद अगर तुम बहुत दूर नीचे चली जाओ तो तुम्हें ज़मीन अंगारे की तरह मिलेगी। चाँद भी ठंडा होने लगा वह ज़मीन से भी ज़्यादा छोटा था इसलिए उसके ठंडे होने में ज़मीन से भी कम दिन लगे। तुम्हें उसकी ठंडक कितनी प्यारी मालूम होती है। उसे ठंडा चाँद ही कहते हैं। शायद वह बर्फ के पहाड़ों और बर्फ से ढके हुए मैदानों से भरा हुआ है।

जब ज़मीन ठंडी हो गई तो हवा में जितनी भाफ थी वह जमकर पानी बन गई और शायद मेंह बनकर बरस पड़ी। उस ज़माने में बहुत ही ज़्यादा पानी बरसा होगा। यह सब पानी ज़मीन के बड़े-बड़े गढ़ों में भर गया और इस तरह बड़े-बड़े समुद्र और सागर बन गए।

ज्यों-ज्यों ज़मीन ठंडी होती गई और समुद्र भी ठंडे होते

गए त्यों-त्यों दोनों जानदार चीज़ों के रहने लायक होते गए।

दूसरे खत में मैं तुम्हें जानदार चीज़ों के पैदा होने का हाल लिखूँगा।

: ४ :

## जानदार चीज़ें कैसे पैदा हुईं

पिछले खत में मैं तुम्हें बतला चुका हूँ कि बहुत दिनों तक ज़मीन इतनी गर्म थी कि कोई जानदार चीज़ उस पर रह ही न सकती थी। तुम पूछोगी कि ज़मीन पर जानदार चीज़ों का आना कब शुरू हुआ और पहले कौन-कौन सी चीज़ें आईं। यह बड़े मज़े का सवाल है, पर इसका जवाब देना भी आसान नहीं है। पहिले यह देखो कि जान है क्या चीज़। शायद तुम कहोगी कि आदमी और जानवर जानदार हैं। लेकिन दरख़्तों और झाड़ियों, फूलों और तरकारियों को क्या कहोगी? यह मानना पड़ेगा कि वे सब भी जानदार हैं। वे पैदा होते हैं, पानी पीते हैं, हवा में साँस लेते हैं और मर जाते हैं। दरख़्त और जानवर में खास फर्क यह है कि जानवर चलता-फिरता है, और दरख़्त हिल नहीं सकते। तुमको याद होगा कि मैंने लंदन के क्यू गार्डन में तुम्हें कुछ पौधे दिखाए थे। ये पौधे, जिन्हें आर्चिड और पिचर[1]

[1] आर्चिड और पिचर एक प्रकार के पौधे हैं जो मक्खियों और कीड़ों को खा जाते हैं।

कहते हैं, सचमुच मक्खियाँ खा जाते हैं। इसी तरह कुछ जानवर भी ऐसे हैं, जो समुद्र के नीचे रहते हैं और चल फिर नहीं सकते। स्पंज ऐसा ही जानवर है। कभी-कभी तो किसी चीज को देखकर यह बतलाना मुश्किल हो जाता है कि वह पौधा है या जानवर। जब तुम वनस्पति-शास्त्र (जड़ीबूटी की विद्या) या जीव-शास्त्र (जिसमें जीव-जंतुओं का हाल लिखा होता है) पढ़ोगी तो तुम इन अजीव चीजों को देखोगी जो न जानवर हैं न पौधे। कुछ लोगों का खयाल है कि पत्थरों और चट्टानों में भी एक किस्म की जान है और उन्हें भी एक तरह का दर्द होता है; मगर हमको इसका पता नहीं चलता। शायद तुम्हें उन महाशय की याद होगी जो हमसे जिनेवा में मिलने आए थे। उनका नाम है सर जगदीश वोस। उन्होंने परीक्षा करके साबित किया है कि पौधों में बहुत-कुछ जान होती है। इनका खयाल है कि पत्थरों में भी कुछ जान होती है।

इससे तुम्हें मालूम होगया होगा कि किसी चीज को जानदार या वेजान कहना कितना मुश्किल है। लेकिन इस वक्त हम पत्थरों को छोड़ देते हैं, सिर्फ जानवरों और पौधों पर ही विचार करते हैं। आज संसार में हजारों जानदार चीजें हैं। वे सभी किस्म की हैं। मर्द हैं और औरतें हैं। और इनमें से कुछ लोग होशियार हैं और कुछ लोग वेवकूफ हैं। जानवर भी बहुत तरह के हैं और उनमें भी हाथी, बन्दर या चींटी की तरह समझदार जानवर हैं और बहुत से जानवर बिलकुल वेसमझ भी हैं। मछलियाँ और

समुद्र की और बहुत चीज़ें जानदारों में और भी नीचे दरजे की हैं। उनसे भी नीचा दरजा स्पंजों और मुरब्बे की शक्ल की मछलियों का है जो आधा पौधा और आधा जानवर हैं।

अब हमको इस बात का पता लगाना है कि ये भिन्न-भिन्न प्रकार के जानवर एक साथ और एक वक़्त पैदा हुए या एक-एक करके धीरे-धीरे। हमें यह कैसे मालूम हो? उस पुराने ज़माने की लिखी हुई तो कोई किताब है नहीं। लेकिन क्या संसार की पुस्तक से हमारा काम चल सकता है? हाँ, चल सकता है। पुरानी चट्टानों में जानवरों की हड्डियाँ मिलती हैं, इन्हें अंग्रेजी में फ़ौसिल या पथराई हुई हड्डी कहते हैं। इन हड्डियों से इस बात का पता चलता है कि उस चट्टान के बनने के बहुत पहिले वह जानवर जरूर रहा होगा जिसकी हड्डियाँ मिली हैं। तुमने इस तरह की बहुत सी छोटी और बड़ी हड्डियाँ लंदन के साउथ कैंसिंगटन के अजायबघर में देखी थीं।

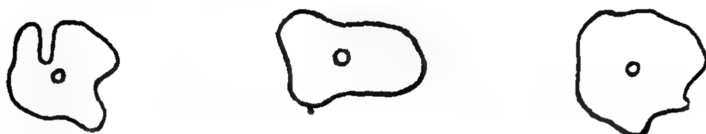
जब कोई जानवर मर जाता है तो उसका नर्म और मांस वाला भाग तो फ़ौरन ही सड़ जाता है, लेकिन उसकी हड्डियाँ बहुत दिनों तक बनी रहती हैं। यही हड्डियाँ उस पुराने ज़माने के जानवरों का कुछ हाल हमें बताती हैं। लेकिन अगर कोई जानवर बिना हड्डी का ही हो, जैसे मुरब्बे की शक्ल वाली मछलियाँ होती हैं, तो उसके मर जाने पर कुछ भी बाक़ी न रहेगा।

जब हम चट्टानों को ग़ौर से देखते हैं और बहुत सी पुरानी

हड्डियों को जमा कर लेते हैं तो हमें मालूम हो जाता है कि भिन्न-भिन्न समय में भिन्न-भिन्न प्रकार के जानवर रहते थे। सब के सब एक बारगी कहीं से कूदकर नहीं आ गए। सबसे पहिले छिलकेदार जानवर पैदा हुए जैसे घोंघे। समुद्र के किनारे तुम जो सुन्दर घोंघे बटोरती हो वे उन जानवरों के कड़े छिलके हैं जो मर चुके हैं। उसके बाद ज़्यादा ऊँचे दरजे के जानवर पैदा हुए, जिनमें साँप और हाथी जैसे बड़े जानवर थे, और वह चिड़ियाँ और जानवर भी, जो आज तक मौजूद हैं। सबके पीछे आदमियों की हड्डियाँ मिलती हैं। इससे यह पता चलता है कि जानवरों के पैदा होने में भी एक क्रम था। पहिले नीचे दरजे के जानवर आए, तब ज़्यादा ऊँचे दरजे के जानवर पैदा हुए और ज्यों ज्यों दिन गुज़रते गए वे और भी बारीक होते गए और आखिर में सबसे ऊँचे दरजे का जानवर यानी आदमी पैदा हुआ। सीधे सादे स्पंज और घोंघे में कैसे इतनी तब्दीलियाँ हुई और कैसे वे इतने ऊँचे दरजे पर पहुँच गए; यह बड़ी मजेदार कहानी है और किसी दिन मैं उसका हाल बताऊँगा। इस वक्त तो हम सिर्फ उन जानदारों का ज़िक्र कर रहे हैं जो पहिले पैदा हुए।

ज़मीन के ठंडे हो जाने के बाद शायद पहिली जानदार चीज वह नर्म मुरब्बे की सी चीज़ थी जिस पर न कोई खोल था न कोई हड्डी थी वह समुद्र में रहती थी। हमारे पास उनकी हड्डियाँ नहीं हैं क्योंकि उनके हड्डियाँ थीं ही नहीं, इसलिए हमें कुछ न

कुछ अटकल से काम लेना पड़ता है। आज भी समुद्र में बहुत सी मुरब्बे की सी चीजें हैं। वे गोल होती हैं लेकिन उनकी सूरत बराबर बदलती रहती है क्योंकि न उनमें कोई हड्डी है न खोल। उनकी सूरत कुछ इस तरह की होती है।



तुम देखती हो कि बीच में एक दाग़ है। इसे बीज कहते हैं और यह एक तरह से उसका दिल है। यह जानवर, या इन्हें जो चाहे कहो, एक अजीब तरीके से कटकर एक के दो हो जाते हैं। पहिले वे एक जगह पतले होने लगते हैं और इसी तरह पतले होते चले जाते हैं, यहाँ तक कि टूट कर दो मुरब्बे की सी चीज़ें बन जाते हैं और दोनों ही की शक्ल असली लोथड़े की सी होती है।

बीज या दिल के भी दो टुकड़े हो जाते हैं और दोनों लोथड़ों के हिस्से में इसका एक-एक टुकड़ा आ जाता है। इस तरह ये जानवर टूटते और बढ़ते चले जाते हैं।

इसी तरह की कोई चीज़ सबसे पहिले हमारे संसार में आई होगी। जानदार चीज़ों का कितना सीधा सादा और तुच्छ रूप था! सारी दुनिया में इससे अच्छी या ऊँचे दरजे की चीज़ उस

वक़्त न थी। असली जानवर पैदा न हुए थे और आदमी के पैदा होने में लाखों वरस की देर थी।



इन लोथड़ों के बाद समुद्र की घास और घोंघे, केकड़े और कीड़े पैदा हुए। तब मछलियाँ आईं। इनके बारे में हमें बहुत सी बातें मालूम होती हैं क्योंकि उन पर कड़े खोल या हड्डियाँ थीं और इसे वे हमारे लिए छोड़ गई हैं ताकि उनके मरने के बहुत दिनों के बाद हम उन पर ग़ौर कर सकें। यह घोंघे समुद्र के किनारे ज़मीन पर पड़े रह गए। इन पर बालू और ताज़ी मिट्टी जमती गई और ये बहुत हिफाजत से पड़े रहे। नीचे की मिट्टी, ऊपर की बालू और मिट्टी के बोझ और दबाव से कड़ी होती गई। यहाँ तक कि वह पत्थर जैसी हो गई। इस तरह समुद्र के नीचे चट्टानें बन गईं। किसी भूचाल के आ जाने से या और किसी सबब से ये चट्टानें समुद्र के नीचे से निकल आईं और सूखी ज़मीन बन गईं। तब इस सूखी चट्टान को नदियाँ और मेंह बहा ले गए। और जो हड्डियाँ उनमें लाखों वरसों से छिपी थीं बाहर निकल आईं। इस तरह हमें ये घोंघे या हड्डियाँ मिल गईं जिनसे हमें मालूम हुआ कि हमारी ज़मीन आदमी के पैदा होने के पहिले कैसी थी।

दूसरी चिट्ठी में हम इस बात पर विचार करेंगे कि ये नीचे दरजे के जानवर कैसे बढ़ते-चढ़ते आजकल की सी सूरत के हो गए।

: ५ :

## जानवर कब पैदा हुए

हम बतला चुके हैं कि शुरू में छोटे-छोटे समुद्री जानवर और पानी में होने वाले पौधे दुनिया की जानदार चीज़ों में थे। वे सिर्फ पानी में ही रह सकते थे और अगर किसी वजह से बाहर निकल आते और उन्हें पानी न मिलता तो ज़रूर मर जाते होंगे। जैसे आज भी मछलियाँ सूखे में आने से मर जाती हैं। लेकिन उस ज़माने में आजकल से कहीं ज़्यादा समुद्र और दलदल रहे होंगे। वे मछलियाँ और दूसरे पानी के जानवर जिनकी खाल ज़रा चिमड़ी थी, सूखी जमीन पर दूसरों से कुछ ज़्यादा देर तक जी सकते होंगे। क्योंकि उन्हें सूखने में देर लगती थी। इसलिए नर्म मछलियाँ और उन्हीं की तरह के दूसरे जानवर धीरे-धीरे कम होते गए क्योंकि सूखी ज़मीन पर ज़िन्दा रहना उनके लिए मुश्किल था और जिनकी खाल ज़्यादा सख़्त थी वे बढ़ते गए। सोचो कितनी अजीब बात है! इसका यह मतलब है कि जानवर धीरे-धीरे अपने को आसपास की चीजों के अनुकूल बना लेते हैं। तुमने लन्दन के अजायब घर

में देखा था कि जाड़ों में और ठंडे देशों में जहाँ कसरत से बर्फ गिरती है चिड़ियाँ और जानवर बर्फ की तरह सुफ़ेद हो जाते हैं। गरम देशों में जहाँ हरियाली और दरख़्तों की कसरत होती है वे हरे या किसी दूसरे चमकदार रंग के हो जाते हैं। इसका यह मतलब है कि वे अपने को उसी तरह का बना लेते हैं जैसी उनके आसपास की चीजें हों। उनका रंग इसलिए बदल जाता है कि वे अपने को दुश्मनों से बचा सकें, क्योंकि अगर उनका रंग आसपास की चीजों से मिल जाय तो वे आसानी से दिखाई न देंगे। सर्द मुल्कों में उनकी खाल पर बाल निकल आते हैं जिससे वे गर्म रह सकें। इसीलिए चीते का रंग पीला और धारीदार होता है, उस धूप की तरह जो दरख़्तों से हो कर जंगल में आती है। वह घने जंगल में मुश्किल से दिखाई देता है।

इस अजीब बात का जानना बहुत ज़रूरी है कि जानवर अपने रंग ढंग को आसपास की चीज़ों से मिला देते हैं। यह बात नहीं है कि जानवर अपने को बदलने की कोशिश करते हों; लेकिन जो अपने को बदल कर आसपास की चीजों से मिला देते हैं उनका जिन्दा रहना ज़्यादा आसान हो जाता है। उनकी तादाद बढ़ने लगती है, दूसरों की नहीं बढ़ती। इससे बहुत सी बातें समझ में आ जाती हैं। इससे यह मालूम हो जाता है कि नीचे दरजे के जानवर धीरे-धीरे ऊँचे दरजों में पहुँचते हैं और मुमकिन है कि लाखों बरसों के बाद आदमी हो जाते हैं।

हम ये तब्दीलियाँ, जो हमारे चारों तरफ होती रहती हैं, देख नहीं सकते, क्योंकि वे बहुत धीरे-धीरे होती हैं और हमारी जिन्दगी कम होती है। लेकिन प्रकृति अपना काम करती रहती है और चीज़ों को बदलती और सुधारती रहती है। वह न तो कभी रुकती है और न आराम करती है।

तुम्हें याद है कि दुनिया धीरे-धीरे ठंडी हो रही थी और इसका पानी सूखता जाता था। जब यह ज़्यादा ठंडी हो गई तो जलवायु बदल गया और उसके साथ ही और भी बहुत सी बातें बदल गईं। ज्यों-ज्यों दुनिया बदलती गई जानवर भी बदलते गए और नए-नए किस्म के जानवर पैदा होते गए। पहिले नीचे दरजे के दरियाई जानवर पैदा हुए, फिर ज़्यादा ऊँचे दरजे के। इसके बाद जब सूखी ज़मीन ज़्यादा हो गई तो ऐसे जानवर पैदा हुए जो पानी और ज़मीन दोनों ही पर रह सकते हैं जैसे, मगर या मेंढक। इसके बाद वे जानवर पैदा हुए जो सिर्फ ज़मीन पर रह सकते हैं और तब हवा में उड़नेवाली चिड़ियाँ आईं।

मैंने मेंढक का जिक्र किया है। इस अजीब जानवर की ज़िंदगी से बड़ी-बड़ी मज़े की बातें मालूम होती हैं। साफ समझ में आ जाता है कि दरियाई जानवर बदलते-बदलते क्योंकर ज़मीन के जानवर बन गए। मेंढक पहिले मछली होता है, लेकिन बाद को वह खुश्की का जानवर हो जाता है और दूसरे खुश्की के जानवरों की तरह फेफड़े से साँस लेता है। उस पुराने ज़माने

में जब खुश्की के जानवर पैदा हुए बड़े-बड़े जंगल थे। जमीन सारी की सारी झाबर रही होगी, उसपर घने जंगल होंगे। आगे चलकर ये चट्टान और मिट्टी के बोझ से ऐसे दब गए कि वह धीरे-धीरे कोयला बन गए। तुम्हें मालूम है कोयला गहरी खानों से निकलता है, ये खानें असल में पुराने जमाने के जंगल हैं।

शुरू-शुरू में ज़मीन के जानवरों में बड़े-बड़े साँप, छिपकलियाँ और घड़ियाल थे। इनमें से बाज़ १०० फीट लम्बे थे। १०० फीट लम्बे साँप या छिपकली का जरा ध्यान तो करो! तुम्हें याद होगा कि तुमने इन जानवरों की हड्डियाँ लंदन के अजायब घर में देखी थीं।

इसके बाद वे जानवर पैदा हुए जो कुछ-कुछ हाल के जानवरों से मिलते थे। ये अपने बच्चों को दूध पिलाते थे। पहिले वे भी आजकल के जानवरों से बहुत बड़े होते थे। जो जानवर आदमी से बहुत मिलता-जुलता है वह बन्दर या बनमानुस है। इससे लोग खयाल करते हैं कि आदमी बनमानुस की नस्ल है। इसका यह मतलब है कि जैसे और जानवरों ने अपने को आस-पास की चीज़ों के अनुकूल बना लिया और तरक़्क़ी करते गए इसी तरह आदमी भी पहले एक ऊँचे किस्म का बनमानुस था। यह सच है कि यह तरक़्क़ी करता गया या यों कहो कि प्रकृति उसे सुधारती रही। पर आज उसके घमंड का ठिकाना नहीं। वह खयाल करता है कि और जानवरों से उसका मुक़ाबिला ही

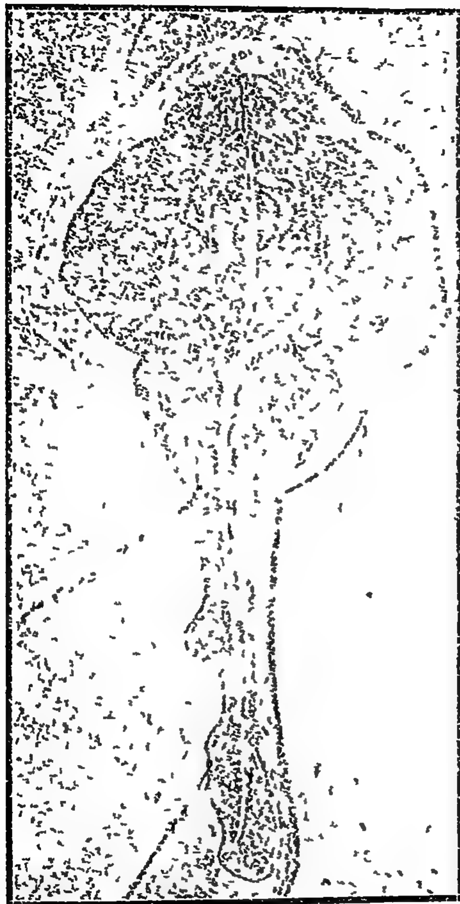
क्या। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि हम बन्दरों और बनमानुसों के भाईबंद हैं और आज भी शायद हममें से बहुतेरों का स्वभाव बन्दरों ही जैसा है।

: ६ :

## आदमी कब पैदा हुआ

मैंने तुम्हें पिछले खत में बतलाया था कि पहिले दुनिया में बहुत नीचे दरजे के जानवर पैदा हुए और धीरे-धीरे तरक़्क़ी करते हुए लाखों बरस में उस सूरत में आए जो हम आज देखते हैं। हमें एक बड़ी दिलचस्प और जरूरी बात यह भी मालूम हुई कि जानदार हमेशा अपने को आसपास की चीज़ों से मिलाने की कोशिश करते गए। इस कोशिश में उनमें नयी-नयी आदतें पैदा होती गईं और वे ज़्यादा ऊँचे दरजे के जानवर होते गए। हमें यह तब्दीली या तरक़्क़ी कई तरह दिखाई देती है। इसकी मिसाल यह है कि शुरू-शुरू के जानवरों में हड्डियाँ न थीं लेकिन हड्डियों के बग़ैर वे बहुत दिनों तक जीते न रह सकते थे इसलिए उनमें हड्डियाँ पैदा हो गईं। सबसे पहिले रीढ़ की हड्डी पैदा हुई। इस तरह दो किस्म के जानवर हो गए—हड्डीवाले और बेहड्डी-वाले। जिन आदमियों या जानवरों को तुम देखती हो वे सब हड्डीवाले हैं।

एक और मिसाल लो। नीचे दरजे के जानवरों में मछलियाँ



खान से निकली हुई मछली जो पत्थर सी हो गई है

अंडे दे कर उन्हें छोड़ देती हैं। वे एक साथ हज़ारों अंडे देती हैं लेकिन उनकी बिलकुल परवाह नहीं करतीं। माँ बच्चों की बिलकुल खबर नहीं लेती। वह अंडों को छोड़ देती है और उनके पास कभी नहीं आती। इन अंडों की हिफाज़त तो कोई करता नहीं, इसलिए ज़्यादातर मर जाते हैं। बहुत थोड़े से अंडों से मछलियाँ निकलती हैं। कितनी जानें बरबाद जाती हैं! लेकिन ऊँचे दरजे के जानवरों को देखो तो मालूम होगा कि उनके अंडे या बच्चे कम होते हैं लेकिन वे उनकी खूब हिफाज़त करते हैं। मुर्गी भी अंडे देती है लेकिन वह उन पर बैठती है और उन्हें सेती है। जब बच्चे निकल आते हैं तो वह कई दिन तक उन्हें चुगाती है। जब बच्चे बड़े हो जाते हैं तब माँ उनकी फिक्र छोड़ देती है।

इन जानवरों में और उन जानवरों में जो बच्चे को दूध पिलाते हैं बड़ा फर्क है। ये जानवर अंडे नहीं देते। माँ अंडे को अपने अंदर लिये रहती है और पूरे तौर पर बने हुए बच्चे जनती है। जैसे कुत्ते, बिल्ली या खरगोश। इसके बाद माँ अपने बच्चे को दूध पिलाती है, लेकिन इन जानवरों में भी बहुत से बच्चे बरबाद हो जाते हैं। खरगोश के कई-कई महीनों के बाद बहुत से बच्चे पैदा होते हैं लेकिन इनमें से ज़्यादातर मर जाते हैं। लेकिन ऊँचे दरजे के जानवर एक ही बच्चा देते हैं और बच्चे को अच्छी तरह पालते पोसते हैं, जैसे हाथी।

अब तुमको यह भी मालूम हो गया कि जानवर ज्यों-ज्यों तरक़्क़ी करते हैं वे अंडे नहीं देते बल्कि अपनी सूरत के पूरे बने हुए बच्चे जनते हैं, जो सिर्फ कुछ छोटे होते हैं। ऊँचे दरजे के जानवर आमतौर से एक बार एक ही बच्चा देते हैं। तुमको यह भी मालूम होगा कि ऊँचे दरजे के जानवरों को अपने बच्चों से थोड़ा बहुत प्रेम होता है। आदमी सबसे ऊँचे दरजे का जानवर है इसलिए माँ और बाप अपने बच्चे को बहुत प्यार करते और उसकी हिफाजत करते हैं।

इससे यह मालूम होता है कि आदमी जरूर नीचे दरजे के जानवरों से पैदा हुआ होगा। शायद शुरू के आदमी आजकल के से आदमियों की तरह थे ही नहीं। वे आधे बनमानुस और आधे आदमी रहे होंगे और बन्दरों की तरह रहते होंगे। तुम्हें याद है कि जर्मनी के हाइडल बर्ग में तुम हम लोगों के साथ एक प्रोफेसर से मिलने गई थीं? उन्होंने एक अजायबखाना दिखाया था जिसमें पुरानी हड्डियाँ भरी हुई थीं, खासकर एक पुरानी खोपड़ी जिसे वह संदूक में रखे हुए थे। खयाल किया जाता है कि यह शुरू-शुरू के आदमी की खोपड़ी होगी। हम अब उसे हाइडल बर्ग का आदमी कहते हैं, सिर्फ इसलिए कि खोपड़ी हाइडल बर्ग के पास गड़ी हुई मिली थी। यह तो तुम जानती ही हो कि उस जमाने में न हाइडल बर्ग का पता था न किसी दूसरे शहर का।

उस पुराने ज़माने में, जब कि आदमी इधर-उधर घूमते

फिरते थे, बड़ी सख़्त सरदी पड़ती थी इसीलिए उसे बर्फ़ का ज़माना कहते हैं। बर्फ़ के बड़े-बड़े पहाड़ जैसे आजकल उत्तरी ध्रुव के पास हैं, इंगलैण्ड और जर्मनी तक बहते चले आते थे। आदमियों को रहना बहुत मुश्किल होता होगा, और उन्हें बड़ी तकलीफ़ से दिन काटने पड़ते होंगे। वे वहीं रह सकते होंगे जहाँ बर्फ़ के पहाड़ न हों। वैज्ञानिक लोगों ने लिखा है कि उस जमाने में भूमध्य सागर न था बल्कि वहाँ एक या दो झीलें थीं। लाल सागर भी न था। यह सब ज़मीन थी। शायद हिन्दुस्तान का बड़ा हिस्सा टापू था और पंजाब और हमारे सूबे का कुछ हिस्सा समुद्र था। खयाल करो कि सारा दक्खिणी हिन्दुस्तान और मध्य हिन्दुस्तान एक बहुत बड़ा द्वीप है और हिमालय और उसके बीच में समुद्र लहरें मार रहा है। तब शायद तुम्हें जहाज़ पर बैठ कर मसूरी जाना पड़ता।

शुरू-शुरू में जब आदमी पैदा हुआ तो इसके चारों तरफ़ बड़े-बड़े जानवर रहे होंगे और उसे उनसे बराबर खटका लगा रहता होगा। आज आदमी दुनिया का मालिक है और जानवरों से जो काम चाहता है करा लेता है। बाज़ों को वह पाल लेता है जैसे घोड़ा, गाय, हाथी, कुत्ता, बिल्ली वग़ैरा। बाज़ों को वह खाता है और बाज़ों का वह दिल बहलाने के लिए शिकार करता है, जैसे शेर और चीता। लेकिन उस ज़माने में वह मालिक न था, बल्कि बड़े-बड़े जानवर उसी का शिकार करते

थे और वह उनसे जान बचाता फिरता था। मगर धीरे-धीरे उसने तरक़्क़ी की और दिन-दिन ज़्यादा ताकतवर होता गया यहाँ तक कि वह सब जानवरों से मज़बूत हो गया। यह बात उसमें कैसे पैदा हुई? बदन की ताकत से नहीं क्योंकि हाथी उससे कहीं ज़्यादा मज़बूत होता है। बुद्धि और दिमाग़ की ताकत से उसमें यह बात पैदा हुई।

आदमी की अक़्ल कैसे धीरे-धीरे बढ़ती गई इसका शुरू से आज तक का पता हम लगा सकते हैं। सच तो यह है कि बुद्धि ही आदमियों को और जानवरों से अलग कर देती है। बिना समझ के आदमी और जानवर में कोई फ़र्क नहीं है।

पहिली चीज़ जिसका आदमी ने पता लगाया वह शायद आग थी। आजकल हम दियासलाई से आग जलाते हैं। लेकिन दियासलाइयाँ तो अभी हाल में बनी हैं। पुराने जमाने में आग बनाने का यह तरीका था कि दो चकमक पत्थरों को रगड़ते थे यहाँ तक कि चिनगारी निकल आती थी और इस चिनगारी से सूखी घास या किसी दूसरी सूखी चीज़ में आग लग जाती थी। जंगलों में कभी-कभी पत्थरों की रगड़ या किसी दूसरी चीज की रगड़ से आप ही आप आग लग जाती है। जानवरों में इतनी अक़्ल कहाँ थी कि इससे कोई मतलब की बात सोचते। लेकिन आदमी ज़्यादा होशियार था उसने आग के फायदे देखे। यह जाड़ों में उसे गर्म रखती थी और बड़े-बड़े जानवरों को, जो उसके दुश्मन थे, भगा देती थी। इसलिए जब कभी आग लग

जाती थी तो मर्द और औरत उसमें सूखी पत्तियाँ फेंक-फेंक कर उसे जलाए रखने की कोशिश करते होंगे। धीरे-धीरे उन्हें मालूम हो गया होगा कि वे चकमक पत्थरों को रगड़ कर खुद आग पैदा कर सकते हैं। उनके लिए यह बड़े मार्के की बात थी, क्योंकि इसने उन्हें दूसरे जानवरों से ताकतवर बना दिया। आदमी को दुनिया के मालिक बनने का रास्ता मिल गया।

: ७ :

## शुरू के आदमी

मैंने अपने पिछले खत में लिखा था कि आदमी और जानवर में सिर्फ़ अक़्ल का फर्क है। अक़्ल ने आदमी को उन बड़े-बड़े जानवरों से ज़्यादा चालाक और मजबूत बना दिया जो मामूली तौर पर उसे नष्ट कर डालते। ज्यों-ज्यों आदमी की अक़्ल बढ़ती गई वह ज़्यादा बलवान होता गया। शुरू में आदमी के पास जानवरों से मुकाबिला करने के लिए कोई खास हथियार न थे। वह उन पर सिर्फ पत्थर फेंक सकता था। इसके बाद उसने पत्थर की कुल्हाड़ियाँ और भाले और बहुत सी दूसरी चीजें भी बनाई जिनमें पत्थर की सुई भी थी। हमने इन पत्थर के हथियारों को साउथ कैंसिंगटन और जेनेवा के अजायबघरों में देखा था।



दूसरी खान मे निकली हुई मछली

धीरे-धीरे वर्फ का जमाना खत्म हो गया जिसका मैंने

अपने पिछले खत में जिक्र किया है। बर्फ के पहाड़ मध्य एशिया और यूरप से ग़ायब हो गए। ज्यों-ज्यों गरमी बढ़ती गई आदमी फैलते गए।

उस ज़माने में न तो मकान थे न और कोई दूसरी इमारत थी। लोग गुफाओं में रहते थे। खेती करना किसी को न आता था। लोग जंगली फल वग़ैरा खाते थे, या जानवरों का शिकार करके मांस खाकर रहते थे। रोटी और भात उन्हें कहाँ मयस्सर होता क्योंकि उन्हें खेती करनी आती ही न थी। वे पकाना भी नहीं जानते थे, हाँ शायद मांस को आग में गर्म कर लेते हों। उनके पास पकाने के बर्तन, जैसे कढ़ाई और पतीली भी न थे।

एक बात बड़ी अजीब है। इन जंगली आदमियों को तसवीर खींचना आता था। यह सच है कि उनके पास काग़ज, कलम, पेंसिल या ब्रश न थे। उनके पास सिर्फ पत्थर की सुइयाँ और नोकदार औज़ार थे। इन्हीं से वे गुफाओं की दीवारों पर जानवरों की तसवीरें बनाया करते थे। उनके बाज़े-बाजे खाके खासे अच्छे हैं मगर वे सब इकरुखे हैं। तुम्हें मालूम है कि इकरुखी तसवीर खींचना आसान है और बच्चे इसी तरह की तसवीरें खींचा करते हैं। गुफाओं में अँधेरा होता था इसलिए मुमकिन है कि वे चिराग जलाते हों।

जिन आदमियों का हमने ऊपर जिक्र किया है वे पाषाण—पत्थर—युग के आदमी कहलाते हैं। उस ज़माने को पत्थर का

युग इसलिए कहते हैं कि आदमी अपने सभी औजार पत्थर के बनाते थे। धातुओं को काम में लाना वे न जानते थे। आजकल हमारी अकसर चीजें धातुओं से बनती हैं, खासकर लोहे से। लेकिन उस ज़माने में किसी को लोहे या काँसे का पता न था। इसलिए पत्थर काम में लाया जाता था, हालाँकि उससे कोई काम करना बहुत मुश्किल था।

पाषाण-युग के खत्म होने के पहिले ही दुनिया की आबहवा बदल गई और उसमें गर्मी आ गई। बर्फ के पहाड़ अब उत्तरी सागर तक ही रहते थे और मध्य एशिया और यूरप में बड़े-बड़े जंगल पैदा हो गए। इन्हीं जंगलों में आदमियों की एक नई जाति रहने लगी। ये लोग बहुत सी बातों में पत्थर के युग के आदमियों से ज़्यादा होशियार थे। लेकिन वे भी पत्थर के ही औज़ार बनाते थे। ये लोग भी पत्थर ही के युग के थे; मगर वह पिछला पत्थर का युग था, इसलिए वे नए पत्थर के युग के आदमी कहलाते थे।

ग़ौर से देखने से मालूम होता है कि नए पत्थर के युग के आदमियों ने बड़ी तरक़्क़ी कर ली थी। आदमी की अक़्ल और जानवरों के मुकाबिले में उसे बड़ी तेज़ी से बढ़ाए लिये जा रही है। इन्हीं नए पाषाण-युग के आदमियों ने एक बहुत बड़ी चीज़ निकाली। यह खेती करने का तरीका था। उन्होंने खेतों को जोतकर खाने की चीजें पैदा करनी शुरू कीं। उनके लिए यह बहुत बड़ी बात थी। अब उन्हें आसानी से खाना मिल

जाता था, इसकी जरूरत न थी कि वे रात दिन जानवरों का शिकार करते रहें। अब उन्हें सोचने और आराम करने की ज़्यादा .फ़ुर्सत मिलने लगी। और उन्हें जितनी ही ज़्यादा .फ़ुर्सत मिलती थी, नई चीजों और तरीकों के निकालने में वे उतनी ही ज़्यादा तरक़्क़ी करते थे। उन्होंने मिट्टी के बर्तन बनाने शुरू किये और उनकी मदद से अपना खाना पकाने लगे। पत्थर के औज़ार भी अब ज़्यादा अच्छे बनने लगे और उन पर पालिश भी अच्छी होने लगी। उन्होंने गाय, कुत्ता, भेड़, बकरी वगैरा जानवरों को पालना सीख लिया और वे कपड़े भी बुनने लगे।

वे छोटे-छोटे घरों या झोपड़ों में रहते थे। ये झोपड़े अक्सर झीलों के बीच में बनाए जाते थे क्योंकि जंगली जानवर या दूसरे आदमी वहाँ उन पर आसानी से हमला न कर सकते थे। इसलिए ये लोग झील के रहने वाले कहलाते थे।

तुम्हें अचम्भा होता होगा कि इन आदमियों के बारे में हमें इतनी बातें कैसे मालूम हो गईं। उन्होंने कोई किताब तो नहीं लिखी। लेकिन मैं तुमसे पहिले ही कह चुका हूँ कि इन आदमियों का हाल जिस किताब में हमें मिलता है वह संसार की किताब है। उसे पढ़ना आसान नहीं है। उसके लिए बड़े अभ्यास की ज़रूरत है। बहुत से आदमियों ने इस किताब के पढ़ने में अपनी सारी उम्र खत्म कर दी है। उन्होंने बहुत सी हड्डियाँ और पुराने ज़माने की बहुत सी निशानियाँ जमा कर

दी हैं। ये चीज़ें बड़े-बड़े अजायबघरों में जमा हैं, और वहाँ हम उम्दा चमकती हुई कुल्हाड़ियाँ और बर्तन, पत्थर के तीर और सुइयाँ, और बहुत सी दूसरी चीज़ें देख सकते हैं, जो पिछले पत्थर के युग के आदमी बनाते थे। तुमने खुद इनमें से बहुत सी चीज़ें देखी हैं लेकिन शायद तुम्हें याद न हो। अगर तुम फिर उन्हें देखो तो ज़्यादा अच्छी तरह समझ सकोगी।

मुझे याद आता है कि जेनेवा के अजायबघर में झील के मकान का एक बहुत अच्छा नमूना रक्खा हुआ था। झील में लकड़ी के डंडे गाड़ दिए गए थे और उनके ऊपर लकड़ी के तख़्ते बाँध कर उन पर झोपड़ियाँ बनाई गई थीं। इस घर और ज़मीन के बीच में एक छोटा सा पुल बना दिया गया था। ये पिछले पत्थर के युग वाले आदमी जानवरों की खालें पहनते थे और कभी-कभी सन के मोटे कपड़े भी पहनते थे। सन एक पौधा है जिसके रेशों से कपड़ा बनता है। आजकल महीन कपड़े सन से बनाये जाते हैं। लेकिन उस जमाने के सन के कपड़े बहुत ही भद्दे रहे होंगे।

ये लोग इसी तरह तरक़्क़ी करते चले गए; यहाँ तक कि उन्होंने ताँबे और काँसे के औज़ार बनाने शुरू किए। तुम्हें मालूम है कि काँसा, ताँबे और राँगे के मेल से बनता है और इन दोनों से ज़्यादा सख़्त होता है। वे सोने का इस्तेमाल करना भी जानते थे और इसके ज़ेवर बनाकर इतराते थे।

हमें यह ठीक तो मालूम नहीं कि इन लोगों को हुए कितने

दिन गुजरे लेकिन अंदाज़ से मालूम होता है कि दस हज़ार साल से कम न हुए होंगे। अभी तक तो हम लाखों बरसों की बात कर रहे थे, लेकिन धीरे-धीरे हम आज-कल के जमाने के क़रीब आते जाते हैं। नए पाषाण के युग के आदमियों में और आज-कल के आदमियों में यकायक कोई तब्दीली नहीं आ गई। फिर भी हम उनके से नहीं हैं। जो कुछ तब्दीलियाँ हुईं बहुत धीरे-धीरे हुईं और यही प्रकृति का नियम है। तरह-तरह की कौमें पैदा हुईं और हर एक कौम के रहन-सहन का ढंग अलग था। दुनिया के अलग-अलग हिस्सों की आबहवा में बहुत फर्क था और आदमियों को अपना रहन-सहन उसी के मुताबिक बनाना पड़ता था। इस तरह लोगों में तब्दीलियाँ होती जाती थीं। लेकिन इस बात का ज़िक्र हम आगे चल कर करेंगे।

आज मैं तुम से सिर्फ एक बात का ज़िक्र और करूँगा। जब नया पत्थर का युग ख़त्म हो रहा था तो आदमी पर एक बड़ी आफत आई। मैं तुमसे पहिले ही कह चुका हूँ कि उस जमाने में भूमध्य सागर था ही नहीं। वहाँ चन्द झीलें थीं और इन्हीं में लोग आबाद थे। यकायक यूरप और अफरीका के बीच में जिब्राल्टर के पास ज़मीन बह गई और अटलांटिक समुद्र का पानी उस नीचे खड्ड में भर आया। इस बाढ़ में बहुत से मर्द और औरतें जो वहाँ रहते थे डूब गए होंगे। भाग कर जाते कहाँ? सैकड़ों मील तक पानी के सिवा कुछ नज़र ही न

आता था। अटलांटिक सागर का पानी बराबर भरता गया और इतना भरा कि भूमध्य सागर बन गया।

तुमने शायद पढ़ा होगा, कम से कम सुना तो है ही, कि किसी जमाने में बड़ी भारी बाढ़ आई थी। बाइबिल में इसका ज़िक्र है और बाज संस्कृत की किताबों में भी उसकी चर्चा आई है। हम तो समझते हैं कि भूमध्य सागर का भरना ही वह बाढ़ होगी। यह इतनी बड़ी आफत थी कि इससे बहुत थोड़े आदमी बचे होंगे। और उन्होंने अपने बच्चों से यह हाल कहा होगा। उन बच्चों को यह बात याद रही होगी और उन्होंने अपने बच्चों से कही होगी। इसी तरह यह कहानी हम तक पहुँची।

: ८ :

## तरह-तरह की क़ौमें क्योंकर बनीं

अपने पिछले खत में मैंने नये पत्थर के युग के आदमियों का जिक्र किया था जो खासकर झीलों के बीच में मकानों में रहते थे। उन लोगों ने बहुत सी बातों में बड़ी तरक़्क़ी कर ली थी। उन्होंने खेती करने का तरीका निकाला। वे खाना पकाना जानते थे और यह भी जानते थे कि जानवरों को पाल कर कैसे काम लिया जा सकता है। ये बातें कई हजार वर्षों की पुरानी हैं और हमें उनका हाल बहुत कम मालूम है लेकिन शायद

आज दुनिया में आदमियों की जितनी कौमें हैं उनमें से अकसर उन्हीं नये पत्थर के युग के आदमियों की संतान हैं। यह तो तुम जानती ही हो कि आजकल दुनिया में गोरे, काले, पीले, भूरे सभी रंगों के आदमी हैं। लेकिन सच्ची बात तो यह है कि आदमियों की कौमों को इन्हीं चार हिस्सों में बाँट देना आसान नहीं है। क़ौमों में ऐसा मेलजोल हो गया है कि उनमें से बहुतों के बारे में यह बतलाना कि वह किस कौम में से हैं बहुत मुश्किल है। वैज्ञानिक लोग आदमियों के सिरों को नाप कर कभी-कभी उनकी कौम का पता लगा लेते हैं। और भी ऐसे कई तरीके हैं जिनसे इस बात का पता चल सकता है।

अब सवाल यह होता है कि ये तरह-तरह की कौमें कैसे पैदा हुईं? अगर सबकी सब एक ही कौम की हैं तो उनमें आज इतना फर्क क्यों है? जर्मन और हबशी में कितना फ़र्क है! एक गोरा है और दूसरा बिलकुल काला। जर्मन के बाल हलके रंग के और लंबे होते हैं मगर हबशी के बाल काले, छोटे और घुँघराले होते हैं। चीनी को देखो तो वह इन दोनों से अलग है। तो यह बतलाना बहुत मुश्किल है कि यह फ़र्क क्योंकर पैदा हो गया, हाँ इसके कुछ कारण हमें मालूम हैं। मैं तुम्हें पहिले ही बतला चुका हूँ कि ज्यों-ज्यों जानवरों का रंग-ढंग आसपास की चीजों के मुताबिक होता गया उनमें धीरे-धीरे तब्दीलियाँ पैदा होती गईं। हो सकता है कि जर्मन और हबशी अलग-अलग कौमों से पैदा हुए हों लेकिन किसी न

किसी ज़माने में उनके पुरखे एक ही रहे होंगे। उनमें जो फर्क पैदा हुआ उसकी वजह या तो यह हो सकती है कि उन्हें अपना रहन-सहन अपने पास पड़ोस की चीजों के मुताबिक बनाना पड़ा या यह कि बाज जानवरों की तरह कुछ जातियों ने औरों से ज़्यादा आसानी के साथ अपना रहन-सहन बदल दिया हो।

मैं तुमको इसकी एक मिसाल देता हूँ। जो आदमी उत्तर के ठंडे और बर्फीले मुल्कों में रहता है उसमें सर्दी बरदाश्त करने की ताकत पैदा हो जाती है। इस जमाने में भी इस्किमो जाति वाले उत्तर के बर्फीले मैदानों में रहते हैं और वहाँ की भयानक सर्दी बरदाश्त करते हैं। अगर वे हमारे जैसे गर्म मुल्क में आयें तो शायद जीते ही न रह सकें। और चूँकि वे दुनिया के और हिस्सों से अलग हैं और उन्हें बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, उन्हें दुनिया की उतनी बातें नहीं मालूम हुईं जितनी और हिस्सों के रहने वाले जानते हैं। जो लोग अफरीका में विषुवत् रेखा के पास रहते हैं, जहाँ बड़ी सख़्त गर्मी पड़ती है, इस गर्मी के आदी हो जाते हैं। इसी तेज धूप के सबब से उनका रंग काला हो जाता है। यह तो तुमने देखा ही है कि अगर तुम समुद्र के किनारे या कहीं और देर तक धूप में बैठो तो तुम्हारा चेहरा साँवला हो जाता है। अगर चंद हफ़्तों तक धूप खाने से आदमी कुछ काला पड़ जाता है तो वह आदमी कितना काला होगा जिसे हमेशा धूप

ही में रहना पड़ता है। तो फिर जो लोग सैकड़ों वर्षों तक गर्म मुल्कों में रहें और वहाँ रहते उनकी कई पीढ़ियाँ गुजर जायें उनके काले हो जाने में क्या ताज्जुब है। तुमने हिन्दुस्तानी किसानों को दोपहरी की धूप में खेतों में काम करते देखा है। वे ग़रीबी की वजह से न ज़्यादा कपड़े पहन सकते हैं, न पहिनते ही हैं। उनकी सारी देह धूप में खुली रहती है और इसी तरह उनकी पूरी उम्र गुजर जाती है। फिर वे क्यों न काले हो जायँ।

इससे तुम्हें यह मालूम हुआ कि आदमी का रंग उस आबहवा की वजह से बदल जाता है जिसमें वह रहता है। रंग से आदमी की लियाकत, भलमनसी या खूबसूरती पर कोई असर नहीं पड़ता। अगर गोरा आदमी किसी गर्म मुल्क में बहुत दिनों तक रहे और धूप से बचने के लिए टट्टियों की आड़ में या पंखों के नीचे न छिपा बैठा रहे, तो वह जरूर साँवला हो जायगा। तुम्हें मालूम है कि हम लोग कश्मीरी हैं और दो सौ साल पहिले हमारे पुरखे कश्मीर में रहते थे। कश्मीर में सभी आदमी, यहाँ तक कि किसान और मजदूर भी, गोरे होते हैं। इसका यही सबब है कि कश्मीर की आबहवा सर्द है। लेकिन वही कश्मीरी जब हिन्दुस्तान के दूसरे हिस्सों में आते हैं, जहाँ ज़्यादा गर्मी पड़ती है, कई पुश्तों के बाद साँवले हो जाते हैं। हमारे बहुत से कश्मीरी भाई खूब गोरे हैं और बहुत से बिलकुल साँवले भी हैं। कश्मीरी जितने ज़्यादा

दिनों तक हिन्दुस्तान के इस हिस्से में रहेगा उसका रंग उतना ही साँवला होगा।

अब तुम समझ गईं कि आबहवा ही की वजह से आदमी का रंग बदल जाता है। यह हो सकता है कि कुछ लोग गर्म मुल्क में रहें लेकिन मालदार होने की वजह से उन्हें धूप में काम न करना पड़े, वे बड़े-बड़े मकानों में रहें और अपने रंग को बचा सकें। अमीर खानदान इस तरह कई पीढ़ियों तक अपने रंग को आबहवा के असर से बचाए रख सकता है लेकिन अपने हाथों से काम न करना और दूसरों की कमाई खाना ऐसी बात नहीं जिस पर हम ग़ुरूर कर सकें। तुमने देखा है कि हिन्दुस्तान में कश्मीर और पंजाब के आदमी आमतौर पर गोरे होते हैं लेकिन ज्यों-ज्यों हम दक्षिण जावें वे काले होते जाते हैं। मदरास और लंका में ये बिलकुल काले होते हैं। तुम जरूर ही समझ जाओगी कि इसका सबब आबहवा है। क्योंकि दक्षिण की तरफ हम जितना ही बढ़ें हम विषुवत् रेखा के पास पहुँचते जाते हैं और गर्मी बढ़ती जाती है। यह बिलकुल ठीक है और यही एक खास वजह है कि हिन्दुस्तानियों के रंग में इतना फर्क है। हम आगे चल कर देखेंगे कि यह फर्क कुछ इस वजह से भी है कि शुरू में जो कौमें हिन्दुस्तान में आकर बसी थीं उनमें आपस में फर्क था। पुराने जमाने में हिन्दुस्तान में बहुत सी कौमें आईं और हालाँकि बहुत दिनों तक उन्होंने अलग रहने की कोशिश की लेकिन वे आखिर में बिना मिले न

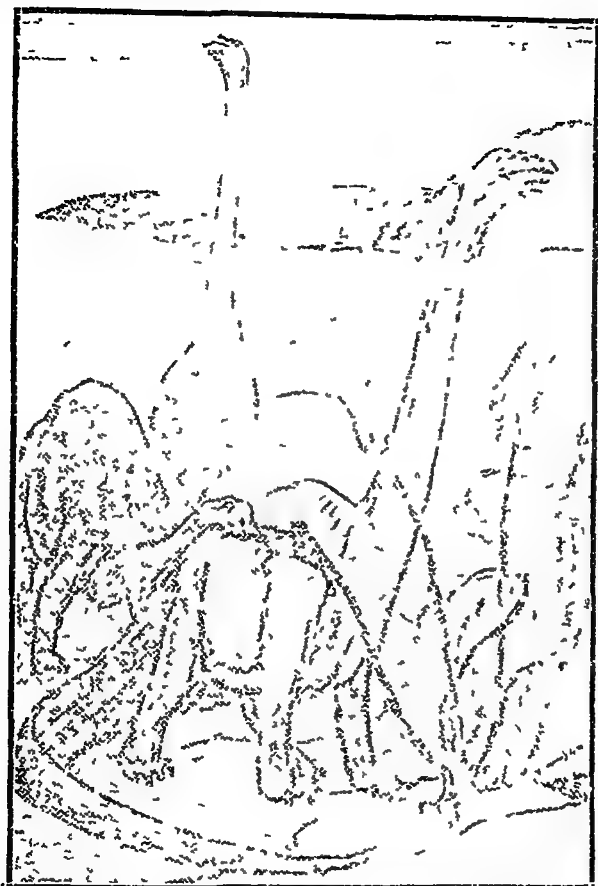
रह सकीं। आज किसी हिन्दुस्तानी के बारे में यह कहना मुश्किल है कि वह पूरी तरह से किसी एक असली कौम का है।

: ६ :

## आदमियों की क़ौमें और ज़बानें

हम यह नहीं कह सकते कि दुनिया के किस हिस्से में पहिले-पहिल आदमी पैदा हुए। न हमें यही मालूम है कि शुरू में वह कहाँ आबाद हुए। शायद आदमी एक ही वक़्त में, कुछ आगे पीछे दुनिया के कई हिस्सों में पैदा हुए। हाँ, इसमें ज़्यादा संदेह नहीं है कि ज्यों-ज्यों बर्फ़ के जमाने के बड़े-बड़े बर्फ़ीले पहाड़ पिघलते और उत्तर की ओर हटते जाते थे, आदमी ज़्यादा गर्म हिस्सों में आते जाते थे। बर्फ़ के पिघल जाने के बाद बड़े-बड़े मैदान बन गए होंगे, कुछ उन्हीं मैदानों की तरह जो आजकल साइबेरिया में हैं। इस ज़मीन पर घास उग आई होगी और आदमी अपने जानवरों को चराने के लिए इधर-उधर घूमते फिरते होंगे। जो लोग किसी एक जगह टिक कर नहीं रहते बल्कि हमेशा घूमते रहते हैं "खानाबदोश" कहलाते हैं। आज भी हिन्दुस्तान और बहुत से दूसरे मुल्कों में ये खानाबदोश या बंजारे मौजूद हैं।

आदमी बड़ी-बड़ी नदियों के पास आबाद हुए होंगे, क्योंकि नदियों के पास की जमीन बहुत उपजाऊ और खेती के



सीटियो सॉरस, एक पुराना रेंगनेवाला जानवर

लिए वहुत अच्छी होती है। पानी की तो कोई कमी थी ही नहीं और जमीन में खाने की चीज़ें आसानी से पैदा हो जाती थीं, इसलिए हमारा खयाल है कि हिन्दुस्तान में लोग सिंध

और गंगा जैसी बड़ी-बड़ी नदियों के पास बसे होंगे, मेसोपोटैमिया में दजला और फरात के पास, मिस्र में नील के पास और उसी तरह चीन में भी हुआ होगा।

हिन्दुस्तान की सब से पुरानी कौम, जिसका हाल हमें कुछ मालूम है, द्रविड़ है। उसके बाद हम जैसा आगे देखेंगे, आर्य आए और पूरब में मंगोल जाति के लोग आए। आजकल भी, दक्षिणी हिन्दुस्तान के आदमियों में बहुत से द्रविड़ों की संतानें हैं। वे उत्तर के आदमियों से ज़्यादा काले हैं, इसलिए कि शायद द्रविड़ लोग हिन्दुस्तान में और ज़्यादा दिनों से रह रहे हैं। द्रविड़ जाति वालों ने बड़ी उन्नति कर ली थी, उनकी अलग एक ज़बान थी और वे दूसरी जाति वालों से बड़ा व्यापार भी करते थे। लेकिन हम बहुत तेजी से बढ़े जा रहे हैं।

उस ज़माने में पश्चिमी एशिया और पूर्वी यूरप में एक नई जाति पैदा हो रही थी। यह आर्य कहलाती थी। संस्कृत में आर्य शब्द का अर्थ है शरीफ आदमी या ऊँचे कुल का आदमी। संस्कृत आर्यों की एक जबान थी इसलिए इससे मालूम होता है कि वे लोग अपने को बहुत शरीफ और खानदानी समझते थे। ऐसा मालूम होता है कि वे लोग भी आजकल के आदमियों की ही तरह शेखीबाज़ थे। तुम्हें मालूम है कि अँगरेज़ अपने को दुनिया में सब से बढ़कर समझता है, फ्रांसीसी का भी यही खयाल है कि मैं ही सबसे बड़ा हूँ, इसी तरह जर्मन, अमरीकन और दूसरी जातियाँ भी अपने ही

बड़प्पन का राग अलापती हैं।

ये आर्य उत्तरी एशिया और यूरप के चरागाहों में घूमते रहते थे। लेकिन जब उनकी आबादी बढ़ गई और पानी और चारे की कमी हो गई तो उन सबके लिए खाना मिलना मुश्किल हो गया। इसलिए वे खाने की तलाश में दुनिया के दूसरे हिस्सों में जाने के लिए मजबूर हुए। एक तरफ तो वे सारे यूरप में फैल गए, दूसरी तरफ हिन्दुस्तान, ईरान और मेसोपोटैमिया में आ पहुँचे। इससे हमें मालूम होता है कि यूरप, उत्तरी हिन्दुस्तान, ईरान और मेसोपोटैमिया की सभी जातियाँ असल में एक ही पुरखों की संतान हैं, यानी आर्यों की; हालाँ कि आजकल उनमें बड़ा फर्क है। यह तो मानी हुई बात है कि इधर बहुत जमाना गुजर गया और तबसे बड़ी-बड़ी तब्दीलियाँ हो गईं और कौमें आपस में बहुत कुछ मिल गईं। इस तरह आज की बहुत सी जातियों के पुरखे आर्य ही थे।

दूसरी बड़ी जाति मंगोल है। यह सारे पूर्वी एशिया अर्थात् चीन, जापान, तिब्बत, स्याम और बर्मा में फैल गई। उन्हें कभी-कभी पीली जाति भी कहते हैं। उनके गालों की हड्डियाँ ऊँची और आँखें छोटी होती हैं।

अफरीका और कुछ दूसरी जगहों के आदमी हबशी हैं। वे न आर्य हैं न मंगोल और उनका रंग बहुत काला होता है। अरब और फलिस्तीन की जातियाँ—अरबी और यहूदी—एक दूसरी ही जाति से पैदा हुईं।

ये सभी जातियाँ हज़ारों साल के ज़माने में बहुत सी छोटी-छोटी जातियों में बँट गई हैं और कुछ मिलजुल गई हैं। मगर हम उनकी तरफ़ ध्यान न देंगे। भिन्न-भिन्न जातियों के पहिचानने का एक अच्छा और दिलचस्प तरीक़ा उनकी ज़बानों का पढ़ना है। शुरू-शुरू में हर एक जाति की एक अलग ज़बान थी, लेकिन ज्यों-ज्यों दिन गुज़रता गया उस एक ज़बान से बहुत सी ज़बानें निकलती गईं। लेकिन ये सब ज़बानें एक ही माँ की बेटियाँ हैं। हमें उन ज़बानों में बहुत से शब्द एक से ही मिलते हैं और इस से मालूम होता है कि उनमें कोई गहरा नाता है।

जब आर्य एशिया और यूरप में फैल गए तो उनका आपस में मेल जोल न रहा। उस ज़माने में न रेल गाड़ियाँ थीं, न तार व डाक, यहाँ तक कि लिखी हुई किताबें तक न थीं। इसलिए आर्यों का हरएक हिस्सा एक ही ज़बान को अपने-अपने ढंग पर बोलता था, और कुछ दिनों के बाद यह असली ज़बान से, या आर्य देशों की दूसरी बहनों से, बिलकुल अलग हो गई। यही सबब है कि आज दुनिया में इतनी ज़बानें मौजूद हैं।

लेकिन अगर हम इन ज़बानों को ग़ौर से देखें तो मालूम होगा कि गो वे बहुत सी हैं लेकिन असली ज़बानें बहुत कम हैं। मिसाल के तौर पर देखो कि जहाँ-जहाँ आर्य जाति के लोग गए वहाँ उनकी ज़बान आर्य खानदान की ही रही। संस्कृत,

लैटिन, यूनानी, अँगरेजी, फ़्रांसीसी, जर्मनी, इटाली और बाज दूसरी ज़बानें सब बहिनें हैं और आर्य खानदान की ही हैं। हमारी हिन्दुस्तानी जबानों में भी जैसे हिन्दी, उर्दू, बंगला, मराठी और गुजराती, सब संस्कृत की संतान हैं और आर्य-वंश में हैं।

ज़बान का दूसरा बड़ा खानदान चीनी है। चीनी, बर्मी, तिब्बती और स्यामी जबानें उसीसे निकली हैं। तीसरा खानदान शेम जबान का है जिससे अरबी और इबरानी जबानें निकली हैं।

कुछ ज़बानें जैसे तुर्की और जापानी इनमें से किसी वंश में नहीं हैं। दक्खिणी हिन्दुस्तान की कुछ ज़बानें, जैसे तमिल, तेलगु, मलयालम् और कन्नड़ भी उन खानदानों में नहीं हैं। ये चारों द्रविड़ खानदान में हैं और बहुत पुरानी हैं।

: १० :

## ज़बानों का आपस में रिश्ता

हम बतला चुके कि आर्य बहुत से मुल्कों में फैल गए और जो कुछ भी उनकी ज़बान थी उसे अपने साथ लेते गए। लेकिन तरह-तरह की आबहवा और तरह-तरह की हालतों ने आर्यों की बड़ी-बड़ी जातियों में बहुत फ़र्क़ पैदा कर दिया। हर एक जाति अपने ही ढंग पर बदलती गई और उसकी आदतें और



इगुआनोडान

रस्में भी बदलती गईं। वे दूसरे मुल्कों में दूसरी जातियों से न मिल सकते थे, क्योंकि उस जमाने में सफर करना बहुत मुश्किल था, एक गिरोह दूसरे से अलग होता था। अगर एक मुल्क के आदमियों को कोई नई बात मालूम हो जाती, तो वे उसे दूसरे मुल्क वालों को न बतला सकते। इस तरह तब्दीलियाँ होती गईं और कई पुश्तों के बाद एक आर्य जाति के बहुत से टुकड़े हो गए। शायद वे यह भी भूल गए कि हम एक ही बड़े खानदान से हैं। उनकी एक जबान से बहुत सी जबानें पैदा हो गईं जो आपस में बहुत कम मिलती जुलती थीं।

लेकिन गो उनमें इतना फ़र्क मालूम होता था, उनमें बहुत से शब्द एक ही थे, और कई दूसरी बातें भी मिलती जुलती थीं। आज हज़ारों साल के बाद भी हमें तरह-तरह की भाषाओं में एक ही शब्द मिलते हैं। इससे मालूम होता है कि किसी जमाने में ये भाषायें एक ही रही होंगी। तुम्हें मालूम है कि फ़्रांसीसी और अँगरेज़ी में बहुत से एक ही शब्द हैं। दो बहुत घरेलू और मामूली शब्द ले लो, "फ़ादर" और "मदर"। हिन्दी और संस्कृत में यह शब्द "पिता" और "माता" हैं। लैटिन में वे "पेटर" और "मेटर" हैं; यूनान में "पेटर" और "मीटर"; जर्मन में "फाटेर" और "मुत्तर"; फ़्रांसीसी में "पेर" और "मेर" और इसी तरह और ज़बानों में भी। ये शब्द आपस में कितने मिलते जुलते हैं! भाई बहिनों की तरह उनकी सूरतें

कितनी समान हैं! यह सच है कि बहुत से शब्द एक भाषा से दूसरी भाषा में आ गए होंगे। हिन्दी ने बहुत से शब्द अँगरेज़ी से लिए हैं और अँगरेजी ने भी कुछ शब्द हिन्दी से लिये हैं। लेकिन "फादर" और "मदर" इस तरह कभी न लिये गए होंगे। ये नए शब्द नहीं हो सकते। शुरू-शुरू में जब लोगों ने एक दूसरे से बात करनी सीखी तो उस वक़्त माँ-बाप तो थे ही उनके लिए शब्द भी बन गए। इसलिए हम कह सकते हैं कि ये शब्द बाहर से नहीं आए। वे एक ही पुरखे या एक ही खानदान से निकले होंगे। और इससे हमें मालूम हो सकता है कि जो क़ौमें आज दूर-दूर के मुल्कों में रहती हैं और भिन्न-भिन्न भाषायें बोलती हैं वे सब किसी ज़माने में एक ही बड़े खानदान की रही होंगी। तुमने देख लिया न कि ज़बानों का सीखना कितना दिलचस्प है और उससे हमें कितनी बातें मालूम होती हैं। अगर हम तीन चार ज़बानें जान जायँ तो और ज़बानों का सीखना आसान हो जाता है।

तुमने यह भी देखा कि बहुत से आदमी जो अब दूर-दूर मुल्कों में एक दूसरे से अलग रहते हैं किसी ज़माने में एक ही क़ौम के थे। तब से हम में बहुत फ़र्क हो गया है और हम अपने पुराने रिश्ते भूल गए हैं। हर एक मुल्क के आदमी ख़याल करते हैं कि हमीं सब से अच्छे और अक़्लमन्द हैं और दूसरी जातें हमसे घटिया हैं। अँगरेज़ ख़याल करता है कि वह और उसका मुल्क सबसे अच्छा है; फ़्रांसीसी को अपने मुल्क

और सभी फ्रांसीसी चीजों पर घमंड है; जर्मन और इटालियन अपने मुल्कों को सबसे ऊँचा समझते हैं। और बहुत से हिन्दुस्तानियों का खयाल है कि हिन्दुस्तान बहुत सी बातों में सारी दुनिया से बढ़ा हुआ है। यह सब डींग है। हरएक आदमी अपने को और अपने मुल्क को अच्छा समझता है लेकिन दर-असल कोई ऐसा आदमी नहीं है जिसमें कुछ ऐब और कुछ हुनर न हों। इसी तरह कोई ऐसा मुल्क नहीं है जिसमें कुछ बातें अच्छी और कुछ बुरी न हों। हमें जहाँ कहीं अच्छी बात मिले उसे ले लेना चाहिए और बुराई जहाँ कहीं हो उसे दूर कर देना चाहिए। हमको तो अपने मुल्क हिन्दुस्तान की ही सब से ज़्यादा फ़िक्र है। हमारे दुर्भाग्य से इसका जमाना आजकल बहुत खराब है और बहुत से आदमी ग़रीब और दुखी हैं। उन्हें अपनी ज़िन्दगी में कोई खुशी नहीं है। हमें इसका पता लगाना है कि हम उन्हें कैसे ज़्यादा सुखी बना सकते हैं। हमें यह देखना है कि हमारे रस्म रिवाज में क्या खूबियाँ हैं और उनको बचाने की कोशिश करना है, जो बुराइयाँ हैं उन्हें दूर करना है। अगर हमें दूसरे मुल्कों में कोई अच्छी बात मिले तो उसे ज़रूर ले लेना चाहिए।

हम हिन्दुस्तानी हैं और हमें हिन्दुस्तान में रहना और उसी की भलाई के लिए काम करना है। लेकिन हमें यह न भूलना चाहिए कि दुनिया के और हिस्सों के रहने वाले हमारे रिश्तेदार और कुटुम्बी हैं। क्या ही अच्छी बात होती अगर

दुनिया के सभी आदमी खुश और सुखी होते। हमें कोशिश करनी चाहिए कि सारी दुनिया ऐसी हो जाय जहाँ लोग चैन से रह सकें।

: ११ :

## सभ्यता क्या है ?

मैं आज तुम्हें पुराने ज़माने की सभ्यता का कुछ हाल बताता हूँ। लेकिन इसके पहिले हमें यह समझ लेना चाहिए कि सभ्यता का अर्थ क्या है। कोप में तो इसका अर्थ लिखा है अच्छा करना, सुधारना, जंगली आदतों की जगह अच्छी आदतें पैदा करना। और इसका व्यवहार किसी समाज, या जाति के लिए ही किया जाता है। आदमी की जंगली दशा को, जब वह बिलकुल जानवरों का सा होता है, बर्बरता कहते हैं। सभ्यता बिलकुल उसकी उलटी चीज़ है। हम बर्बरता से जितनी ही दूर जाते हैं उतने ही सभ्य होते जाते हैं।

लेकिन हमें यह कैसे मालूम हो कि कोई आदमी या समाज जंगली है या सभ्य ? यूरप के बहुत से आदमी समझते हैं कि हमीं सभ्य हैं और एशिया वाले जंगली हैं। क्या इसका यह सबब है कि यूरप वाले एशिया और अफ़रीका वालों से ज़्यादा कपड़ा पहिनते हैं ? लेकिन कपड़े तो आबहवा पर मुनहसिर हैं। ठंडे मुल्क में लोग गर्म मुल्क वालों से ज़्यादा कपड़े पहिनते हैं।

तो क्या इसका यह सबब है कि जिसके पास बन्दूक है वह निहत्थे आदमी से ज़्यादा मजबूत और इसलिए ज़्यादा सभ्य है? चाहे वह ज़्यादा सभ्य हो या न हो, कमजोर आदमी उससे यह नहीं कह सकता कि आप सभ्य नहीं हैं। कहीं मजबूत आदमी झल्ला कर उसे गोली मार दे, तो वह बेचारा क्या करेगा?

तुम्हें मालूम है कि कई साल पहिले एक बड़ी लड़ाई हुई थी! दुनिया के बहुत से मुल्क उसमें शरीक थे और हर एक आदमी दूसरी तरफ के ज़्यादा से ज़्यादा आदमियों को मार डालने की कोशिश कर रहा था। अँगरेज जर्मनी वालों के ख़ून के प्यासे थे और जर्मन अँगरेजों के खून के। इस लड़ाई में लाखों आदमी मारे गए और हजारों के अंग भंग हो गए—कोई अंधा हो गया, कोई लूला, कोई लँगड़ा। तुमने फ्रांस और दूसरी जगह भी ऐसे बहुत से लड़ाई के ज़ख्मी देखे होंगे। पेरिस की सुरंग वाली रेलगाड़ी में, जिसे मेट्रो कहते हैं, उनके लिए खास जगहें हैं। क्या तुम समझती हो कि इस तरह अपने भाइयों को मारना सभ्यता और समझदारी की बात है? दो आदमी गलियों में लड़ने लगते हैं, तो पुलीस वाले उनमें बीच बिचाव कर देते हैं। और लोग समझते हैं कि ये दोनों कितने बेवकूफ हैं। तो जब दो बड़े-बड़े मुल्क आपस में लड़ने लगें और हज़ारों और लाखों आदमियों को मार डालें तो वह कितनी बड़ी बेवक़ूफी या पागलपन है! यह ठीक वैसा ही है जैसे दो वहशी

जंगलों में लड़ रहे हों। और अगर वहशी आदमी जंगली कहे जा सकते हैं तो वह मूर्ख कितने जंगली हैं जो इस तरह लड़ते हैं?

अगर इस निगाह से तुम इस मामले को देखो, तो तुम फौरन कहोगी कि इँगलैंड, जर्मनी, फ्रांस, इटली और बहुत से दूसरे मुल्क जिन्होंने इतनी मार काट की ज़रा भी सभ्य नहीं हैं। और फिर भी तुम जानती हो कि इन मुल्कों में कितनी अच्छी-अच्छी चीजें हैं और वहाँ कितने अच्छे-अच्छे आदमी रहते हैं।

अब तुम कहोगी कि सभ्यता का मतलब समझना आसान नहीं है, और यह ठीक है। यह बहुत ही मुश्किल मामला है। अच्छी-अच्छी इमारतें, अच्छी-अच्छी तसवीरें और किताबें और तरह-तरह की दूसरी और खूबसूरत चीज़ें ज़रूर सभ्यता की पहचान हैं। मगर एक भला आदमी जो स्वार्थी नहीं है और सब की भलाई के लिए दूसरों के साथ मिलकर काम करता है सभ्यता की इससे भी बड़ी पहचान है। मिलकर काम करना अकेले काम करने से अच्छा है, और सब की भलाई के लिए एक साथ मिलकर काम करना सबसे अच्छी बात है।

: १२ :

## जातियों का बनना

मैंने अपने पिछले खतों में तुम्हें बतलाया है कि शुरू में जब आदमी पैदा हुआ तो वह बहुत कुछ जानवरों से मिलता था। धीरे-धीरे हजारों बरसों में उसने तरक़्क़ी की और पहिले से ज़्यादा होशियार हो गया। पहिले वह अकेले ही जानवरों का शिकार करता होगा, जैसे जंगली जानवर आज भी करते हैं। कुछ दिनों के बाद उसे मालूम हुआ कि और आदमियों के साथ एक गरोह में रहना ज़्यादा अक़्ल की बात है और उसमें जान जाने का डर भी कम है। एक साथ रहकर वे ज़्यादा मजबूत हो जाते थे और जानवरों या दूसरे आदमियों के हमलों का ज़्यादा अच्छी तरह मुकाबिला कर सकते थे। जानवर भी तो अपनी रक्षा के लिए अकसर झुण्डों में रहा करते हैं। भेड़, बकरियाँ और हिरन, यहाँ तक कि हाथी भी झुण्डों ही में रहते हैं। जब झुण्ड सोता है, तो उनमें से एक जागता रहता है और उनका पहरा देता है। तुमने भेड़ियों के झुण्ड की कहानियाँ पढ़ी होंगी। रूस में जाड़ों के दिनों में वे झुण्ड बाँध कर चलते हैं और जब उन्हें भूख लगती है, जाड़ों में उन्हें ज़्यादा भूख लगती भी है, तो आदमियों पर हमला कर देते हैं। एक भेड़िया कभी आदमी पर हमला नहीं करता लेकिन उनका एक झुण्ड इतना मजबूत हो जाता है कि कई आदमियों पर भी हमला कर बैठता है।

तब आदमियों को अपनी जान लेकर भागना पड़ता है और अक्सर भेड़ियों और बर्फ वाली गाड़ियों में बैठे हुए आदमियों में दौड़ होती है।

इस तरह पुराने जमाने के आदमियों ने सभ्यता में जो पहिली तरक़्क़ी की वह मिलकर झुण्डों में रहना था। इस तरह जातियों (फिरकों) की बुनियाद पड़ी। वे साथ-साथ काम करने लगे। वे एक दूसरे की मदद करते रहते थे। हरएक आदमी पहिले अपनी जाति का खयाल करता था और तब अपना। अगर जाति पर कोई संकट आता तो हरएक आदमी जाति की तरफ से लड़ता था। और अगर कोई आदमी जाति के लिए लड़ने से इनकार करता तो निकाल बाहर किया जाता था।

अब अगर बहुत से आदमी एक साथ मिलकर काम करना चाहते हैं तो उन्हें कायदे के साथ काम करना पड़ेगा। अगर हर-एक आदमी अपनी मर्ज़ी के मुताबिक काम करे तो वह जाति बहुत दिन न चलेगी। इसलिए किसी एक को उनका सरदार बनना पड़ता है। जानवरों के झुण्डों में भी तो सरदार होते हैं। जातियों में वही आदमी सरदार चुना जाता था जो सबसे मजबूत होता था इसलिए कि उस ज़माने में बहुत लड़ाई करनी पड़ती थी।

अगर एक जाति के आदमी आपस में लड़ने लगें तो जाति नष्ट हो जायगी। इसलिए सरदार देखता रहता था कि लोग आपस में न लड़ने पावें। हाँ, एक जाति दूसरी जाति से लड़

सकती थी और लड़ती थी। यह तरीका उस पुराने तरीक़े से अच्छा था जब हरएक आदमी अकेला ही लड़ता था।

शुरू-शुरू की जातियाँ बड़े-बड़े परिवारों की तरह रही होंगी। उसके सब आदमी एक दूसरे के रिश्तेदार होते होंगे। ज्यों-ज्यों यह परिवार बढ़े जातियाँ भी बढ़ीं।

उस पुराने जमाने में आदमी का जीवन बहुत कठिन रहा होगा, खासकर जातियों के बनने के पहिले। न उसके पास कोई घर था, न कपड़े थे। हाँ, शायद जानवरों की खालें पहिनने को मिल जाती हों। और उसे बराबर लड़ना पड़ता रहा होगा। अपने भोजन के लिए या तो जानवरों का शिकार करना पड़ता था या जंगली फल जमा करने पड़ते थे। उसे अपने चारों तरफ दुश्मन ही दुश्मन नजर आते होंगे। प्रकृति भी उसे दुश्मन ही मालूम होती होगी, क्योंकि ओले और बर्फ और भूचाल वही तो लाती थी। बेचारे की दशा कितनी दीन थी। जमीन पर रेंग रहा है, और हर एक चीज़ से डरता है इसलिए कि वह कोई बात समझ नहीं सकता। अगर ओले गिरते तो वह समझता कि कोई देवता बादल में बैठा हुआ उसपर निशाना मार रहा है। वह डर जाता था और उस बादल में बैठे हुए आदमी को खुश करने के लिए कुछ न कुछ करना चाहता था जो उसपर ओले और पानी और बर्फ गिरा रहा था। लेकिन उसे खुश करे तो कैसे! न वह बहुत समझदार था, न होशियार था। उसने सोचा होगा कि बादलों का देवता हमारी ही तरह होगा और

खाने की चीजें पसंद करता होगा। इसलिए वह कुछ मांस रख देता था, या किसी जानवर की कुरबानी कर के छोड़ देता था कि देवता आ कर खाले। वह सोचता था कि इस उपाय से ओला या पानी बन्द हो जायगा। हमें यह पागलपन मालूम होता है क्योंकि हम मेंह या ओले या वर्फ के गिरने का सवव जानते हैं। जानवरों के मारने से उसका कोई संवंध नहीं है। लेकिन आज भी ऐसे आदमी मौजूद हैं जो इतने नासमझ हैं कि अब तक वही काम किये जाते हैं।

: १३ :

## मज़हव की शुरुआत और काम का बँटवारा

पिछले खत में मैंने तुम्हें वतलाया था कि पुराने ज़माने में आदमी हरएक चीज़ से डरता था और खयाल करता था कि उस पर मुसीवतें लाने वाले देवता हैं जो क्रोधी हैं और हसद करते हैं। उसे ये फ़र्जी देवता—जंगल, पहाड़, नदी, वादल—सभी जगह नजर आते थे। देवता को वह दयालु और नेक नहीं समझता था, उसके खयाल में वह वहुत ही क्रोधी था और वात वात पर झल्ला उठता था। और चूँकि वे उसके गुस्से से डरते थे इसलिए वे उसे भेंट दे कर, खास कर खाना पहुँचा कर, हर तरह की रिश्वत देने की कोशिश करते रहते थे। जव कोई बड़ी



सीराटो सॉरस

आफत आ जाती थी, जैसे भूचाल, या बाढ़ या महामारी जिसमें बहुत से आदमी मर जाते थे, तो वे लोग डर जाते थे और सोचते थे कि देवता नाराज़ हैं। उन्हें खुश करने के लिए वे मर्दों औरतों का बलिदान करते, यहाँ तक कि अपने ही बच्चों को मार कर देवताओं को चढ़ा देते। यह बड़ी भयानक बात मालूम होती है लेकिन डरा हुआ आदमी जो कुछ न कर बैठे थोड़ा है।

इसी तरह मजहब शुरू हुआ होगा। इसलिए मज़हब पहिले डर के रूप में आया और जो बात डर से की जावे बुरी है। तुम्हें मालूम है कि मज़हब हमें बहुत सी अच्छी अच्छी बातें सिखाता है। जब तुम बड़ी हो जाओगी, तो तुम दुनिया के मज़हबों का हाल पढ़ोगी और तुम्हें मालूम होगा कि मजहब के नाम पर क्या क्या अच्छी और बुरी बातें की गई हैं। यहाँ हमें सिर्फ यह देखना है कि मजहब का खयाल कैसे पैदा हुआ, और क्योंकर बढ़ा। लेकिन चाहे वह जिस तरह बढ़ा हो, हम आज भी लोगों को मजहब के नाम पर एक दूसरे से लड़ते और सिर फोड़ते देखते हैं। बहुत से आदमियों के लिए मजहब आज भी वैसी ही डरावनी चीज़ है। वह अपना वक्त फर्जी देवताओं को खुश करने के लिए, मन्दिरों में पूजा चढ़ाने और जानवरों की कुरबानी करने में खर्च करते हैं।

इससे मालूम होता है कि शुरू में आदमी को कितनी कठि-

नाइयों का सामना करना पड़ता था। उसे अपना रोज का खाना तलाश करना पड़ता था नहीं तो भूखों मर जाता। उन दिनों कोई आलसी आदमी ज़िंदा न रह सकता था। कोई ऐसा भी नहीं कर सकता था कि एक ही दिन बहुत सा खाना जमा करले और बहुत दिनों तक आराम से पड़ा रहे।

जब जातियाँ (फिरके) बन गईं, तो आदमी को कुछ सुविधा हो गई। एक जाति के सब आदमी मिल कर उससे ज़्यादा खाना जमा कर लेते थे जितना कि वे अलग अलग कर सकते थे। तुम जानती हो कि मिल कर काम करना या सहयोग हमें ऐसे बहुत से काम करने में मदद देता है जो हम अकेले नहीं कर सकते। एक या दो आदमी कोई भारी बोझ नहीं उठा सकते लेकिन कई आदमी मिल कर आसानी से उठा ले जा सकते हैं। दूसरी बड़ी तरक़्क़ी जो उस जमाने में हुई वह खेती थी। तुम्हें यह सुन कर ताज्जुब होगा कि खेती का काम पहिले कुछ चीटियों ने शुरू किया। मेरा यह मतलब नहीं है कि चीटियाँ बीज बोतीं, हल चलातीं या खेत काटती हैं। मगर वे कुछ इसी तरह की बात करती हैं। अगर उन्हें कोई ऐसी झाड़ी मिलती है, जिसके बीज वे खाती हों, तो वे बड़ी होशियारी से उसके आस-पास की घास निकाल डालती हैं। इससे वह दरख़्त ज़्यादा फलता फूलता और बढ़ता है। शायद किसी जमाने में आदमियों ने भी यही किया होगा जो चीटियाँ करती हैं। तब उन्हें यह समझ क्या थी कि खेती क्या चीज है। इसके जानने में उन्हें

एक जमाना गुजर गया होगा और तब उन्हें मालूम हुआ होगा कि बीज कैसे बोया जाता है।

खेती शुरू हो जाने पर खाना मिलना बहुत आसान हो गया। आदमी को खाने के लिए सारे दिन शिकार करना पड़ता था। उनकी ज़िंदगी पहिले से ज़्यादा आराम से कटने लगी। इसी ज़माने में एक और बड़ी तब्दीली पैदा हुई। खेती के पहिले हर एक आदमी शिकारी था और शिकार ही उसका एक काम था। औरतें शायद बच्चों की देख रेख करती होंगी और फल बटोरती होंगी। लेकिन जब खेती शुरू हो गई तो तरह-तरह के काम निकल आये। खेतों में भी काम करना पड़ता था, शिकार करना, गाय बैलों की देख-भाल करना भी ज़रूरी था। औरतें शायद गउओं की देख-भाल करती थीं और गायों को दुहती थीं। कुछ आदमी एक तरह का काम करने लगे, कुछ दूसरी तरह का।

आज तुम्हें दुनिया में हरएक आदमी एक खास किस्म का काम करता हुआ दिखाई देता है। कोई डाक्टर है, कोई सड़कों और पुलों का बनाने वाला इंजिनियर, कोई बढ़ई, कोई लुहार, कोई घरों का बनाने वाला, कोई मोची या दरज़ी वग़ैरा। हरएक आदमी का अपना अलग पेशा है और दूसरे पेशों के बारे में वह कुछ नहीं जानता। इसे काम का बँटना कहते हैं। अगर कोई आदमी एक ही काम करे तो उसे बहुत अच्छी तरह करेगा। बहुत से काम वह इतनी अच्छी तरह

पूरा नहीं कर सकता, दुनिया में आजकल इसी तरह काम बँटा हुआ है।

जब खेती शुरू हुई तो पुरानी जातियों में इसी तरह धीरे-धीरे काम का बँटना शुरू हुआ।

: १४ :

## खेती से पैदा हुई तब्दीलियाँ

अपने पिछले खत में मैंने कामों के अलग-अलग किये जाने का कुछ हाल बतलाया था। बिलकुल शुरू में जब आदमी सिर्फ शिकार पर बसर करता था, काम बँटे हुए न थे। हरएक आदमी शिकार करता था और मुश्किल से खाने भर को पाता था। पहिले मर्दों और औरतों के बीच में कांम बँटना शुरू हुआ होगा, मर्द शिकार करता होगा और औरत घर में रहकर बच्चों और पालतू जानवरों की निगरानी करती होगी।

जब आदमियों ने खेती करना सीखा तो बहुत सी नई-नई बातें निकलीं। पहिली बात यह हुई कि काम कई हिस्सों में बँट गया। कुछ लोग शिकार खेलते और कुछ खेती करते और हल चलाते। ज्यों ज्यों दिन गुजरते गए आदमी ने नए-नए पेशे सीखे और उनमें पक्के हो गए।

खेती करने का दूसरा अच्छा नतीजा यह हुआ कि लोग

गाँव और कस्बों में आबाद होने लगे। खेती के पहिले लोग इधर-उधर घूमते फिरते थे और शिकार करते थे। उनके लिए एक जगह रहना जरूरी नहीं था। शिकार हरएक जगह मिल जाता था। इसके सिवा उन्हें गायों, बकरियों और अपने दूसरे जानवरों की वजह से इधर-उधर घूमना पड़ता था। इन जानवरों को चरने के लिए चरागाह की ज़रूरत थी। एक जगह कुछ दिनों तक चरने के बाद ज़मीन में जानवरों के लिए काफी घास न पैदा होती थी और सारी जाति को दूसरी जगह जाना पड़ता था।

जब लोगों को खेती करना आ गया तो उनका ज़मीन के पास रहना जरूरी हो गया। ज़मीन को जोत-बोकर वे छोड़ न सकते थे। उन्हें साल भर तक लगातार खेती का काम लगा ही रहता था और इस तरह गाँव और शहर बन गए।

दूसरी बड़ी बात जो खेती से पैदा हुई वह यह थी कि आदमी की जिन्दगी ज़्यादा आराम से कटने लगी। खेती से ज़मीन में खाना पैदा करना सारे दिन शिकार खेलने से कहीं ज़्यादा आसान था। इसके सिवा ज़मीन में खाना भी इतना पैदा होता था जितना वह एक दम खा नहीं सकते थे। इससे वह हिफाज़त से रखते थे। एक और मज़े की बात सुनो। जब आदमी निपट शिकारी था तो वह कुछ जमा न कर सकता था या कर भी सकता था तो बहुत कम, किसी तरह पेट भर लेता था। उसके पास बैंक न थे जहाँ वह अपने रुपये या दूसरी चीजें

रख सकता। उसे तो अपना पेट भरने के लिए रोज शिकार खेलना पड़ता था, खेती से उसे एक फसल में जरूरत से ज़्यादा मिल जाता था। इस फालतू खाने को यह जमा कर देता था। इस तरह लोगों ने फालतू अनाज जमा करना शुरू किया। लोगों के पास फालतू खाना इसलिए हो जाता था कि वह उससे कुछ ज़्यादा मेहनत करते थे जितना सिर्फ पेट भरने के लिए जरूरी था। तुम्हें मालूम है कि आजकल बैंक खुले हुए हैं जहाँ लोग रुपये जमा करते हैं और चेक लिखकर निकाल सकते हैं। यह रुपया कहाँ से आता है? अगर तुम गौर करो तो तुम्हें मालूम होगा कि यह फालतू रुपया है यानी ऐसा रुपया जिसे लोगों को एकबारगी खर्च करने की जरूरत नहीं है इसलिए इसे वे बैंक में रखते हैं। वही लोग मालदार हैं जिनके पास बहुत सा फालतू रुपया है, और जिनके पास कुछ नहीं वे गरीब हैं। आगे तुम्हें मालूम होगा कि यह फालतू रुपया आता कहाँ से है। इसका सबब यह नहीं है कि आदमी दूसरे से ज़्यादा काम करता है और ज़्यादा कमाता है बल्कि आजकल जो आदमी बिलकुल काम नहीं करता उसके पास तो बचत होती है और जो पसीना बहाता है उसे खाली हाथ रहना पड़ता है। कितना बुरा इंतजाम है! बहुत से लोग समझते हैं कि इसी बुरे इंतजाम के सबब से दुनिया में आजकल इतने गरीब आदमी हैं। अभी शायद तुम यह बात समझ न सको इसलिये इसमें सिर न खपाओ। थोड़े दिनों में तुम इसे समझने लगोगी।

इस वक्त तो तुम्हें इतना ही जानना काफी है कि खेती से आदमी को उससे ज़्यादा खाना मिलने लगा जितना वह एकदम खा सकता था। यह जमा कर लिया जाता था। उस जमाने में न रुपये थे न बैंक। जिनके पास बहुत सी गायें, भेड़ें, ऊँट या अनाज होता था वही अमीर कहलाते थे।

: १५ :

## ख़ानदान का सरग़ना कैसे बना

मुझे भय है कि मेरे खत कुछ पेचीदा होते जा रहे हैं। लेकिन अब जिन्दगी भी तो पेचीदा हो गई है। पुराने ज़माने में लोगों की जिन्दगी बहुत सादी थी और हम अब उस ज़माने पर आ गए हैं जब ज़िन्दगी का पेचीदा होना शुरू हुआ। अगर हम पुरानी बातों को ज़रा सावधानी के साथ जाँचें और उन तब्दीलियों को समझने की कोशिश करें जो आदमी की जिन्दगी और समाज में पैदा होती गईं, तो हमारी समझ में बहुत सी बातें आ जायँगी। अगर हम ऐसा न करेंगे तो हम उन बातों को कभी न समझ सकेंगे जो आज दुनिया में हो रही हैं। हमारी हालत उन बच्चों की सी होगी जो किसी जंगल में रास्ता भूल गए हों। यही सबब है कि मैं तुम्हें ठीक जंगल के किनारे पर लिये चलता हूँ ताकि हम इसमें से अपना रास्ता ढूँढ निकालें।



मैमथ

तुम्हें याद होगा कि तुमने मुझसे मसूरी में पूछा था कि बादशाह क्या हैं और वह कैसे बादशाह हो गए। इस लिए हम उस पुराने जमाने पर एक नज़र डालेंगे जब राजा बनने शुरू हुए। पहिले पहिल वह राजा न कहलाते थे। अगर उनके बारे में कुछ मालूम करना है तो हमें यह देखना होगा कि वे शुरू कैसे हुए।

मैं जातियों के बनने का हाल तुम्हें बतला चुका हूँ। जब खेती-बारी शुरू हुई और लोगों के काम अलग-अलग हो गए तो यह ज़रूरी हो गया कि जाति का कोई बड़ा-बूढ़ा काम को आपस में बाँट दे। इसके पहिले भी जातियों में ऐसे आदमी की ज़रूरत होती थी जो उन्हें दूसरी जातियों से लड़ने के लिए तैयार करे। अकसर जाति का सबसे बूढ़ा आदमी सरग़ना होता था। वह जाति का बुज़ुर्ग कहलाता था। सबसे बूढ़ा होने की वजह से यह समझा जाता था कि वह सब से ज़्यादा तजरुबेकार और होशियार है। यह बुजुर्ग जाति के और आदमियों की ही तरह होता था। वह दूसरों के साथ काम करता था और जितनी खाने की चीज़ें पैदा होती थीं वे जाति के सब आदमियों में बाँट दी जाती थीं। हरएक चीज़ जाति की होती थी। आजकल की तरह ऐसा न होता था कि हरएक आदमी का अपना मकान और दूसरी चीज़ें हों। और आदमी जो कुछ कमाता था वह आपस में बाँट लिया जाता था क्योंकि वह सब जाति का समझा जाता था। जाति का

बुजुर्ग या सरग़ना इस बाँट-बखरे का इन्तजाम करता था।

लेकिन तब्दीलियाँ बहुत आहिस्ता-आहिस्ता होने लगीं। खेती के आ जाने से नए-नए काम निकल आए और सरगना को अपना बहुत सा वक़्त इन्तज़ाम करने में और यह देखने में कि सब लोग अपना-अपना काम ठीक तौर पर करते हैं या नहीं, ख़र्च करना पड़ता था। धीरे-धीरे सरगना ने जाति के मामूली आदमियों की तरह काम करना छोड़ दिया। वह जाति के और आदमियों से बिलकुल अलग हो गया। अब काम की बटाई बिलकुल दूसरे ढंग की हो गई। सरगना तो इन्तजाम करता था और आदमियों को काम करने का हुक्म देता था और दूसरे लोग खेतों में काम करते थे, शिकार करते थे या लड़ाइयों में जाते थे और अपने सरगना के हुक्मों को मानते थे। अगर दो जातियों में लड़ाई ठन जाती तो सरग़ना और भी ताकतवर हो जाता क्योंकि लड़ाई के ज़माने में बग़ैर किसी अगुआ के अच्छी तरह लड़ना मुमकिन न था। इस तरह सरग़ना की ताकत बढ़ती गई।

जब इन्तज़ाम करने का काम बहुत बढ़ गया तो सरगना के लिए अकेले सब काम मुश्किल हो गया। उसने अपनी मदद के लिए दूसरे आदमियों को लिया। इन्तजाम करने वाले बहुत से हो गए। हाँ, उनका अगुआ सरगना ही था। इस तरह जाति दो हिस्सों में बँट गई, इन्तजाम करने वाले और मामूली काम करने वाले। अब सब लोग बराबर न रहे। जो

लोग इन्तजाम करते थे उनका मामूली मज़दूरों पर दबाव होता था।

अगले खत में मैं दिखाऊँगा कि सरग़ना का इख़्तियार क्योंकर बढ़ा।

: १६ :

## सरग़ना का इख़्तियार कैसे बढ़ा

मुझे उम्मीद है कि पुरानी जातियों और उनके बुजुर्गों का हाल तुम्हें रूखा न मालूम होता होगा।

मैंने अपने पिछले खत में तुम्हें बतलाया था कि उस ज़माने में हरएक चीज सारी जाति की होती थी। किसी की अलग नहीं। सरग़ना के पास भी अपनी कोई खास चीज़ न होती थी। जाति के और आदमियों की तरह उसका भी एक ही हिस्सा होता था। लेकिन वह इन्तजाम करने वाला था और उसका यह काम समझा जाता था कि वह जाति के माल और जायदाद की देख-रेख करता रहे। जब उसका इख़्तियार बढ़ा तो उसे यह सूझी कि यह माल और असबाब जाति का नहीं, मेरा है। या शायद उसने समझा हो कि वह जाति का सरगना है इसलिए उस जाति का मुख़्तार भी है। इस तरह किसी चीज को अपना समझने का खयाल पैदा हुआ। आज हरएक चीज़ को मेरा-तेरा कहना और समझना मामूली बात है। लेकिन जैसा मैं पहिले

तुमसे कह चुका हूँ उस पुरानी जातियों के मर्द और औरत इस तरह खयाल न करते थे। तब हरएक चीज सारी जाति की होती थी। आखिर यह हुआ कि सरग़ना अपने ही को जाति का मुख़्तार समझने लगा। इसलिए जाति का माल व असबाब उसी का हो गया।

जब सरग़ना मर जाता था तो जाति के सब आदमी जमा हो कर कोई दूसरा सरग़ना चुनते थे। लेकिन आमतौर पर सरग़ना के खानदान के लोग इन्तज़ाम के काम को दूसरों से ज़्यादा समझते थे। सरग़ना के साथ हमेशा रहने और उसके काम में मदद देने की वजह से वे इन कामों को खूब समझ जाते थे। इसलिए जब कोई बूढ़ा सरगना मर जाता, तो जाति के लोग उसी खानदान के किसी आदमी को सरग़ना चुन लेते थे। इस तरह सरग़ना का खानदान दूसरों से अलग हो गया और जाति के लोग उसी खानदान से अपना सरग़ना चुनने लगे। यह तो जाहिर है कि सरग़ना को बड़े इख़्तियार होते थे, और वह चाहता था कि उसका बेटा या भाई उसकी जगह सरगना बने। और भरसक इसकी कोशिश करता था। इसलिए वह अपने भाई या बेटे या किसी सगे रिश्तेदार को काम सिखाया करता था जिससे वह उसकी गद्दी पर बैठे। वह जाति के लोगों से कभी-कभी कह भी दिया करता था कि फलाँ आदमी जिसे मैंने काम सिखा दिया है मेरे बाद सरग़ना चुना जावे। शुरू में शायद जाति के आदमियों को यह ताकीद अच्छी न लगी हो लेकिन थोड़े ही

दिनों में उन्हें इसकी आदत पड़ गई और वे उसका हुक्म मानने लगे। नए सरग़ना का चुनाव बन्द हो गया। बूढ़ा सरग़ना तै कर देता था कि कौन उसके बाद सरग़ना होगा और वही होता था।

इससे हमें मालूम हुआ कि सरग़ना की जगह मौरूसी हो गई यानी उसी खानदान में बाप के बाद बेटा या कोई और रिश्तेदार, सरग़ना होने लगा। सरग़ना को अब पूरा भरोसा हो गया कि जाति का माल असबाब दरअसल मेरा ही है यहाँ तक कि उसके मर जाने के बाद भी वह उसके खानदान में ही रहता था। अब हमें मालूम हुआ कि मेरा-तेरा का खयाल कैसे पैदा हुआ। शुरू में किसीके दिल में यह बात न थी। सब लोग मिलकर जाति के लिए काम करते थे, अपने लिए नहीं। अगर बहुत सी खाने की चीज़ें पैदा करते, तो जाति के हरएक आदमी को उसका हिस्सा मिल जाता था। जाति में अमीर-ग़रीब का फ़र्क न था। सभी लोग जाति की जायदाद में बराबर के हिस्सेदार थे।

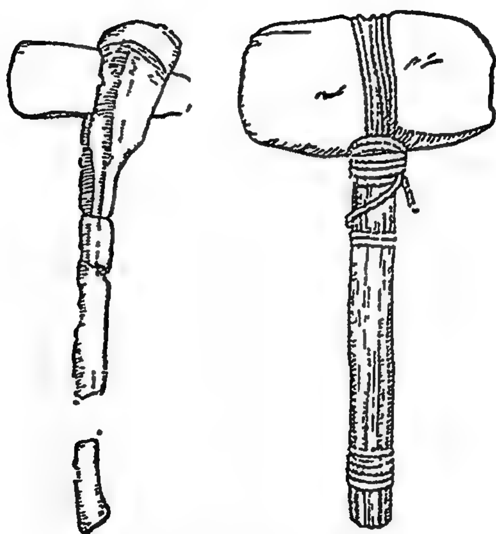
लेकिन ज्योंही सरग़ना ने जाति की चीज़ों को हड़प करना शुरू किया और उन्हें अपनी कहने लगा लोग अमीर और ग़रीब होने लगे। अगले खत में इसके बारे में मैं कुछ और लिखूँगा।

: १७ :

## सरग़ना राजा हो गया

बूढ़े सरग़ना ने हमारा वहुत सा वक़्त ले लिया। लेकिन हम उससे जल्द ही फुर्सत पा जायँगे या यों कहो उसका नाम कुछ और हो जायगा। मैंने तुम्हें यह वतलाने का वादा किया था कि राजा कैसे हुए और वह कौन थे? और राजाओं का हाल समझने के लिए पुराने जमाने के सरग़नों का ज़िक्र जरूरी था। तुमने ताड़ लिया होगा कि यही सरग़ना वाद को राजा और महाराजा वन वैठे। पहिले वह अपनी जाति का अगुआ होता था। अंगरेजी में उसे "पैट्रियार्क" कहते हैं। "पैट्रियार्क" लैटिन शब्द "पेटर" से निकला है जिसके माने पिता के हैं। "पैट्रिया" भी इसी लैटिन शब्द से निकला है जिसके माने हैं "पितृभूमि"। फ्रांसीसी में उसे "पात्री" कहते हैं। संस्कृत और हिन्दी में हम अपने मुल्क को "मातृभूमि" कहते हैं। तुम्हें कौन पसंद है? जव सरगना की जगह मौरूसी हो गई या वाप के वाद वेटे को मिलने लगी तो उसमें और राजा में कोई फर्क न रहा। वही राजा वन वैठा और राजा के दिमाग़ में यह वात समा गई कि मुल्क की सव चीजें मेरी ही हैं। उसने अपने को सरा मुल्क समझ लिया। एक मशहूर फ्रांसीसी वादशाह ने एक मर्तवा कहा था "मैं ही राज हूँ"। राजा भूल गए कि लोगों ने उन्हें सिर्फ इसलिए चुना है कि वे इंतजाम करें और मुल्क की खाने की चीजें और दूसरे सामान

आदमियों में बाँट दें। वे यह भी भूल गए कि वे सिर्फ इसलिए चुने जाते थे कि वह उस जाति या मुल्क में सब से होशियार और तजरुबेकार समझे जाते थे। वे समझने लगे कि हम मालिक हैं और मुल्क के सब आदमी हमारे नौकर हैं। असल में वे ही मुल्क के नौकर थे।



अन्तिम पत्थर काल के औजार

आगे चल कर जब तुम इतिहास पढ़ोगी, तो तुम्हें मालूम होगा कि राजा इतने अभिमानी हो गए कि वे समझने लगे कि प्रजा को उनके चुनाव से कोई वास्ता ही न था। वे कहने लगे कि हमें

ईश्वर ने राजा बनाया है। इसे वे ईश्वर का दिया हुआ हक कहने लगे। बहुत दिनों तक वे यह बेइंसाफी करते रहे और खूब ऐश के साथ राज के मजे उड़ाते रहे और उनकी प्रजा भूखों मरती रही। लेकिन आखिरकार प्रजा इसे बरदाश्त न कर सकी और बाज मुल्कों में उन्होंने राजाओं को मार भगाया। तुम आगे चल कर पढ़ोगी कि इंगलैंड की प्रजा अपने राजा प्रथम चार्ल्स के खिलाफ़ उठ खड़ी हुई थी, उसे हरा दिया और मार डाला। इसी तरह







अन्तिम पत्थर काल के औज़ार

फ़्रांस की प्रजा ने भी एक बड़े हंगामे के बाद यह तै किया कि अब हम किसी को राजा न बनायेंगे। तुम्हें याद होगा कि हम फ़्रांस के कौंसियरजेरी कैदखाने को देखने गए थे। क्या तुम हमारे साथ थीं? इसी कैदखाने में फ़्रांस का राजा और उसकी रानी

मारी आँतांनेत और और लोग रक्खे गए थे। तुम रूस की राज्य-क्रान्ति का हाल भी पढ़ोगी जब रूस की प्रजा ने कई साल हुए अपने राजा को निकाल बाहर किया जिसे 'ज़ार' कहते थे। इससे मालूम होता है कि राजाओं के बुरे दिन आ गए और अब बहुत से मुल्कों में राजा हैं ही नहीं। फ्रांस, जर्मनी, रूस, स्विटज़रलैंड, अमरीका, चीन और बहुत से दूसरे मुल्कों में कोई राजा नहीं है। वहाँ पंचायती राज है जिसका मतलब यह है कि प्रजा समय-समय पर अपने हाकिम और अगुआ चुन लेती है और उनकी जगह मौरूसी नहीं होती।

तुम्हें मालूम है कि इंगलैंड में अभी तक राजा है लेकिन उसे कोई इख़्तियार नहीं है। वह कुछ कर ही नहीं सकता। सब इख़्तियार पार्लमेंट के हाथ में है जिसमें प्रजा के चुने हुए अगुआ बैठते हैं। तुम्हें याद होगा कि तुमने लंदन में पार्लमेंट देखी थी।

हिन्दुस्तान में अभी तक बहुत से राजा, महाराजा और नवाब हैं। तुमने उन्हें भड़कीले कपड़े पहिने, कीमती मोटर गाड़ियों में घूमते, अपने ऊपर बहुत सा रुपया खर्च करते देखा होगा। उन्हें यह रुपया कहाँ से मिलता है? यह रिआया पर टैक्स लगा कर वसूल किया जाता है। टैक्स दिये तो इसलिए जाते हैं कि उससे मुल्क के सभी आदमियों की मदद की जाय, स्कूल और अस्पताल, पुस्तकालय और अजायबघर खोले जायँ, अच्छी सड़कें बनाई जायं और प्रजा की भलाई के लिए और बहुत से काम किए जायँ

लेकिन हमारे राजा महाराजा उसी फ्रांसीसी बादशाह की तरह अब भी यही समझते हैं कि हमीं राज हैं और प्रजा का रुपया अपने ऐश में उड़ाते हैं। वे तो इतनी शान से रहते हैं और उनकी प्रजा जो पसीना बहाकर उन्हें रुपए देती है, भूखों मरती है और उनके बच्चों के पढ़ने के लिए मदरसे भी नहीं होते।

: १८ :

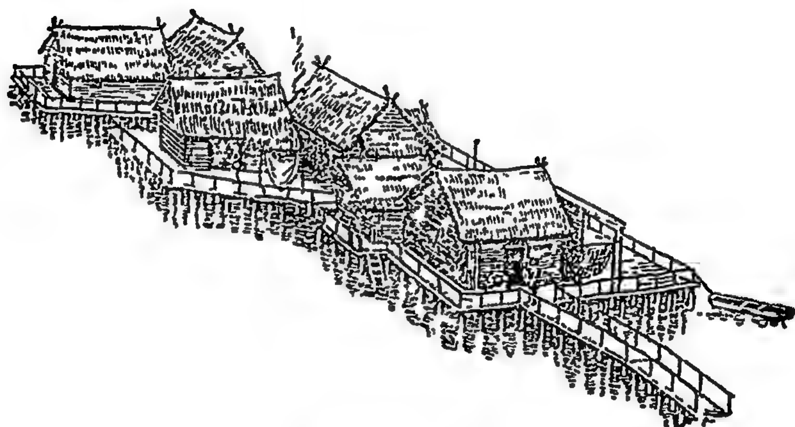
## शुरू का रहन-सहन

सरगनों और राजों की चर्चा हम काफी कर चुके। अब हम उस जमाने के रहन-सहन और आदमियों का कुछ हाल लिखेंगे।

हमें उस पुराने ज़माने के आदमियों का बहुत ज़्यादा हाल तो मालूम नहीं, फिर भी पुराने पत्थर के युग और नए पत्थर के युग के आदमियों से कुछ ज़्यादा ही मालूम है। आज भी बड़ी-बड़ी इमारतों के खंडहर मौजूद हैं जिन्हें बने हज़ारों साल हो गए। उन पुरानी इमारतों, मंदिरों और महलों को देख कर हम कुछ अंदाजा कर सकते हैं कि वे पुराने आदमी कैसे थे और उन्होंने क्या-क्या काम किए। उन पुरानी इमारतों की संगतराशी और नक़्काशी से खासकर बड़ी मदद मिलती है। इन पत्थर के कामों से हमें कभी-कभी इसका पता चल जाता है कि वे लोग कैसे कपड़े

पहनते थे। और भी बहुत सी बातें मालूम हो जाती हैं।

हम यह तो ठीक-ठीक नहीं कह सकते कि पहिले पहिल आदमी कहाँ आबाद हुए और रहने-सहने के तरीके निकाले। बाज़ आदमियों का खयाल है कि जहाँ एटलांटिक सागर है वहाँ एटलांटिक नाम का एक बड़ा मुल्क था। कहते हैं कि इस मुल्क



झील में बने हुए मकान

में रहने वालों का रहन-सहन बहुत ऊँचे दरजे का था, लेकिन किसी वजह से सारा मुल्क एटलांटिक सागर में समा गया और अब उसका कोई हिस्सा बाकी नहीं है। लेकिन किस्से कहानियों को छोड़ कर हमारे पास इसका कोई सबूत नहीं है, इसलिए उसका जिक्र करने की जरूरत नहीं।

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि पुराने जमाने में अमरीका में ऊँचे दरजे की सभ्यता फैली हुई थी। तुम्हें मालूम है कि कोलम्बस को अमरीका का पता लगाने वाला कहा जाता है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि कोलम्बस के जाने के पहिले अमरीका था ही नहीं। इसका खाली इतना मतलब है कि योरप वालों को कोलम्बस के पहिले उसका पता न था। कोलम्बस के जाने के बहुत पहिले से वह मुल्क आबाद और सभ्य था। युकेटन में, जो उत्तरी अमरीका के मेक्सिको राज्य में है, और दक्खिनी अमरीका के पीरू राज्य में, पुरानी इमारतों के खंडहर हमें मिलते हैं। इससे इसका यक़ीन हो जाता है कि बहुत पुराने जमाने में भी पीरू और युकेटन के लोगों में सभ्यता फैली हुई थी। लेकिन उनका और ज़्यादा हाल हमें अब तक नहीं मालूम हो सका। शायद कुछ दिनों के बाद हमें उनके बारे में कुछ और बातें मालूम हों।

यूरप और एशिया को मिलाकर युरेशिया कहते हैं। युरेशिया में सब से पहिले मेसोपोटेमिया, मिस्र, क्रीट, हिन्दुस्तान और चीन में सभ्यता फैली। मिस्र अब अफ्रीका में है लेकिन हम इसे युरेशिया में रख सकते हैं क्योंकि वह इससे बहुत नजदीक है।

पुरानी जातियाँ जो इधर-उधर घूमती फिरती थीं, जब कहीं आबाद होना चाहती होंगी तो वे कैसी जगह पसन्द करती होंगी? वह ऐसी जगह होती होगी जहाँ वे आसानी से खाना पा सकें।

उनका कुछ खाना खेती से जमीन में पैदा होता था। और खेती के लिए पानी का होना ज़रूरी है। पानी न मिले तो खेत सूख जाते हैं और उनमें कुछ नहीं पैदा होता। तुम्हें मालूम है कि जब चौमासे में हिन्दुस्तान में काफी वारिश नहीं होती तो अनाज वहुत कम होता है और अकाल पड़ जाता है। ग़रीब आदमी भूखों मरने लगते हैं। पानी के वग़ैर काम ही नहीं चल सकता। पुराने जमाने के आदमियों को ऐसी ही जमीन चुननी पड़ी होगी जहाँ पानी की कसरत हो। यही हुआ भी।

मेसोपोटैमिया में वे दजला और फ़ेरात इन दो वड़ी नदियों के वीच में आवाद हुए। मिस्र में नील नदी के किनारे। हिन्दुस्तान में उनके करीव-करीव सभी शहर सिंध, गंगा, जमुना इत्यादि वड़ी-वड़ी नदियों के किनारे आवाद हुए। पानी उनके लिए इतना ज़रूरी था कि वे इन नदियों को देवता समझने लगे जो उन्हें खाना और आराम की दूसरी चीजें देता था। मिस्र में वे नील को "पिता नील" कहते थे और उसकी पूजा करते थे। हिन्दुस्तान में गंगा की पूजा होने लगी और अव तक उसे पवित्र समझा जाता है। लोग उसे "गंगा माई" कहते हैं और तुमने यात्रियों को "गंगा माई की जय" का शोर मचाते सुना होगा। यह समझना मुश्किल नहीं है कि क्यों वे नदियों की पूजा करते थे, क्योंकि नदियों से उनके सभी काम निकलते थे। उनसे सिर्फ़ पानी ही न मिलता था, अच्छी मिट्टी और वालू भी मिलती थी जिससे उनके खेत उपजाऊ हो जाते थे। नदी ही के पानी और मिट्टी

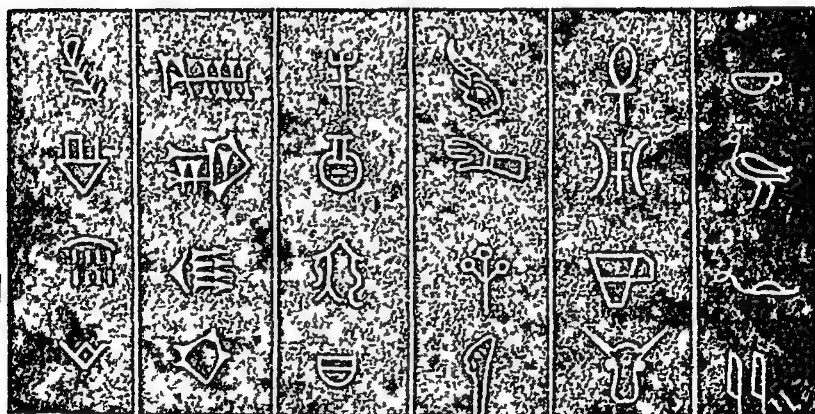
से तो अनाज के ढेर लग जाते थे, फिर वे नदियों को क्यों न 'माता' और 'पिता' कहते। लेकिन आदमियों की आदत है कि वे कामों के असली सबब को भूल जाते हैं। वे बिना सोचे समझे लकीर पीटते चले जाते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि नील और गंगा की बड़ाई सिर्फ इसलिए है कि उनसे आदमियों को अनाज और पानी मिलता है।

: १९ :

## पुरानी दुनिया के बड़े-बड़े शहर

मैं लिख चुका हूँ कि आदमियों ने पहिले पहिल बड़ी-बड़ी नदियों के पास और उपजाऊ घाटियों में बस्तियाँ बनाईं जहाँ उन्हें खाने की चीज़ें और पानी इफ़रात से मिल सकता था। उनके बड़े-बड़े शहर नदियों के किनारे पर थे। तुमने इनमें से बाज मशहूर पुराने शहरों का नाम सुना होगा। मेसोपोटैमिया में बाबुल, नेनुवा और असुर नाम के शहर थे। लेकिन इनमें से किसी शहर का अब पता नहीं है। हाँ, अगर बालू या मिट्टी में गहरी खुदाई होती है तो कभी-कभी उनके खंडहर मिल जाते हैं। इन हजारों बरसों में वे पूरी तरह मिट्टी और बालू से ढक गए और उनका कोई निशान भी नहीं मिलता। बाज जगहों में इन ढके हुए शहरों के ठीक ऊपर नए शहर बस गए। जो लोग इन पुराने शहरों की

खोज कर रहे हैं उन्हें गहरी खुदाई करनी पड़ी है और कभी-कभी तले ऊपर कई शहर मिले हैं। यह बात नहीं है कि ये शहर एक साथ ही तले ऊपर रहे हों। एक शहर सैकड़ों वर्षों तक आबाद रहा होगा, लोग वहाँ पैदा हुए होंगे और मरे होंगे और कई पुश्तों तक यही सिलसिला जारी रहा होगा। धीरे-धीरे शहर की आबादी घटने लगी होगी और वह वीरान हो गया होगा। आखिर वहाँ कोई न रह गया होगा और शहर मलबे का एक ढेर बन गया होगा। तब



चित्र-लिपि

उस पर बालू और गर्द जमने लगी होगी और यह शहर उसके नीचे ढक गए होंगे क्योंकि कोई आदमी सफाई करने वाला न था। एक मुद्दत के बाद सारा शहर बालू और मिट्टी से ढक गया होगा

और लोगों को इस वात की याद भी न रही होगी कि यहाँ कोई शहर था। सैकड़ों वरस गुज़र गए होंगे तव नए आदमियों ने आकर नया शहर वसाया होगा। और यह नया शहर भी कुछ दिनों के बाद पुराना हो गया होगा। लोगों ने उसे छोड़ दिया होगा और वह भी वीरान हो गया होगा। एक जमाने के वाद वह भी वालू और धूल के नीचे गायव हो गया होगा। यही सवव है कि कभी-कभी हमें कई शहरों के खंडहर ऊपर नीचे मिलते हैं। यह हालत खास कर वलुई जगहों में हुई होगी क्योंकि वालू हर एक चीज पर जल्दी से जम जाती है।

कितनी अजीब वात है कि एक के वाद दूसरे शहर वनें, मर्दों, औरतों और वच्चों के जमघटों से गुलजार हों और तव धीरे-धीरे उजड़ जायँ और जहाँ ये पुराने शहर थे वहाँ नए शहर वसें और नए-नए आदमी आकर वहाँ आवाद हों। फिर उनका भी खात्मा हो जाय और शहर का कोई निशान न रहे। मैं तो इन शहरों का हाल दो चार जुमलों में लिख रहा हूँ, लेकिन सोचो कि इन शहरों के वनने और विगड़ने और उनकी जगह नए शहरों के वनने में कितने युग वीत गए होंगे। जव कोई आदमी सत्तर या अस्सी साल का हो जाता है, तो हम उसे बुड्ढा कहते हैं। लेकिन उन हजारों वरसों के सामने सत्तर या अस्सी साल क्या हैं? जव ये शहर रहे होंगे तो उनमें कितने छोटे-छोटे वच्चे वूढे होकर मर गए होंगे और कई पीढ़ियाँ गुजर गई होंगी। और अव

बाबुल और नेनुवा का सिर्फ नाम बाकी रह गया है। एक दूसरा बहुत पुराना शहर दमिश्क था। लेकिन दमिश्क वीरान नहीं हुआ। वह अब तक मौजूद है और बड़ा शहर है। कुछ लोगों का खयाल है कि दमिश्क दुनिया का सबसे पुराना शहर है। हिन्दुस्तान में भी बड़े-बड़े शहर नदियों के किनारे ही पर हैं। सब से पुराने शहरों में एक का नाम इन्द्रप्रस्थ था जो कहीं देहली के आस पास था, लेकिन इन्द्रप्रस्थ का अब निशान भी नहीं है। बनारस या काशी भी बड़ा पुराना शहर है, शायद दुनिया के सब से पुराने शहरों में हो। इलाहाबाद, कानपुर और पटना और बहुत से दूसरे शहर जो तुम्हें खुद याद होंगे नदियों ही के किनारे हैं। लेकिन ये बहुत पुराने नहीं हैं। हाँ, प्रयाग या इलाहाबाद और पटना जिसका पुराना नाम पाटलिपुत्र था कुछ पुराने हैं।

इसी तरह चीन में भी पुराने शहर हैं।

: २० :

## मिस्र और क्रीट

पुराने जमाने के शहरों और गाँवों में किस तरह के लोग रहते थे? उनका कुछ हाल उनके बनाए हुए बड़े-बड़े मकानों और इमारतों से मालूम होता है। कुछ हाल उन पत्थर की तख़्तियों की

लिखावट से भी मालूम होता है जो वे छोड़ गए हैं। इसके अलावा कुछ बहुत पुरानी किताबें भी हैं जिनसे उस पुराने जमाने का बहुत कुछ हाल मालूम हो जाता है।

मिस्र में अब भी बड़े-बड़े मीनार और स्फिंक्स मौजूद हैं। लक्सर और दूसरी जगहों में बहुत बड़े मन्दिरों के खंडहर नज़र आते हैं। तुमने इन्हें देखा नहीं है लेकिन जिस वक़्त हम स्वेज नहर से गुजर रहे थे, वे हम से बहुत दूर न थे। लेकिन तुमने उनकी तसवीरें देखी हैं। शायद तुम्हारे पास उनकी तसवीरों के पोस्टकार्ड मौजूद हों। स्फिंक्स औरत के सिर वाले शेर की मूर्ति को कहते हैं। इसका डीलडौल बहुत बड़ा है। किसी को यह नहीं मालूम कि यह मूर्ति क्यों बनाई गई और उसका क्या मतलब है। उस औरत के चेहरे पर एक अजीब मुर्झाई हुई मुसकिराहट है। और किसी की समझ में नहीं आता कि वह क्यों मुसकिरा रही है। किसी आदमी के बारे में यह कहना कि वह स्फिंक्स की तरह है, इसका यह मतलब है कि तुम उसे बिलकुल नहीं समझते।

मीनार भी बहुत लम्बे चौड़े हैं। दरअसल वे मिस्र के पुराने बादशाहों के मक़बरे हैं जिन्हें फिरऊन कहते थे। तुम्हें याद है कि तुमने लन्दन के अजायबघर में मिस्र की ममी देखी थी? ममी किसी आदमी या जानवर की लाश को कहते हैं जिसमें कुछ ऐसे तेल और मसाले लगा दिये गए हों कि वह सड़ न सके। फिरऊनों की लाशों की ममी बना दी जाती थी और तब उन बड़े-बड़े मीनारों में रख दी जाती थीं। लाशों के पास सोने और

चाँदी के गहने और सजावट की चीज़ें और खाना रख दिया जाता था। क्योंकि लोग ख़्याल करते थे कि शायद मरने के बाद उन्हें इन चीजों की जरूरत हो। दो तीन साल हुए कुछ लोगों ने इनमें से एक मीनार के अन्दर एक फिरऊन की लाश पाई जिसका नाम तूतन खामिन था। उसके पास बहुत सी खूबसूरत और कीमती चीजें रखी हुई मिलीं।

उस जमाने में मिस्र में खेती को सींचने के लिए अच्छी अच्छी नहरें और झीलें भी बनाई जाती थीं। मेरीइ नाम की झील खास तौर पर मशहूर थी। इससे मालूम होता है कि पुराने जमाने के मिस्र के रहने वाले कितने होशियार थे और उन्होंने कितनी तरक़्क़ी की थी। इन नहरों और झीलों और बड़े-बड़े मीनारों को अच्छे-अच्छे इंजीनियरों ने ही तो बनाया होगा।

कैंडिया या क्रीट एक छोटा सा टापू है जो भूमध्य सागर में है। सईद बन्दर से वेनिस जाते वक़्त हम उस टापू के पास से हो कर निकले थे। उस छोटे से टापू में उस पुराने जमाने में बहुत अच्छी सभ्यता पाई जाती थी। नोसोज में एक बहुत बड़ा महल था और उसके खंडहर अब तक मौजूद हैं। इस महल में गुसुलखाने थे और पानी की नलें भी थीं जिन्हें नादान लोग नए जमाने की निकली हुई चीज समझते हैं। इसके अलावा वहाँ खूबसूरत मिट्टी के बरतन, पत्थर की नक़्क़ाशी, तसवीरें और धातु और हाथीदाँत के बारीक काम भी होते थे। इस छोटे से

टापू में लोग बड़ी शांति से रहते थे और उन्होंने खूब तरक़्क़ी की थी।

तुमने मीनास बादशाह का हाल पढ़ा होगा जिसकी निस्बत मशहूर है कि जिस चीज को वह छू लेता था वह सोना हो जाती थी। वह खाना न खा सकता था क्योंकि खाना सोना हो जाता था और सोना तो खाने की चीज नहीं। उसके लालच की उसे यह सजा दी गई थी। यह है तो एक मजेदार कहानी लेकिन इससे हमें यह मालूम होता है कि सोना इतनी अच्छी और कारआमद चीज़ नहीं है जितना लोग खयाल करते हैं। क्रीट के सब राजा मीनास कहलाते थे और यह कहानी उन्हीं में से किसी राजा की होगी।

क्रीट की एक और कथा है जो शायद तुमने सुनी हो। वहाँ मैनोटार नाम का एक देव था जो आधा आदमी और आधा बैल था। कहा जाता है कि जवान आदमी और लड़कियाँ, उसे खाने को दी जाती थीं। मैं तुमसे पहिले ही कह चुका हूँ कि मजहब का खयाल शुरू में किसी अनजानी चीज के डर से पैदा हुआ। लोगों को प्रकृति का कुछ ज्ञान न था, न उन बातों को समझते थे जो दुनिया में बराबर होती रहती थीं। इसलिए डर के मारे वे बहुत सी बेवकूफी की बातें किया करते थे। यह बहुत मुमकिन है कि लड़के और लड़कियों का यह बलिदान किसी असली देव को न किया जाता हो बल्कि वह महज खयाली देव हो क्योंकि मैं समझता हूँ ऐसा देव कभी हुआ ही नहीं।

उस पुराने जमाने में सारे संसार में मर्दों औरतों का फ़र्जी देवताओं के लिए बलिदान किया जाता था। यही उनकी पूजा का ढंग था। मिस्र में लड़कियाँ नील नदी में डाल दी जाती थीं। लोगों का खयाल था कि इससे पिता नील खुश होंगे।

बड़ी खुशी की बात है कि अब आदमियों का बलिदान नहीं किया जाता, हाँ, शायद दुनिया के किसी कोने में कभी-कभी हो जाता हो। लेकिन अब भी ईश्वर को खुश करने के लिए जानवरों का बलिदान किया जाता है। किसी की पूजा करने का यह कितना अनोखा ढंग है!

: २१ :

## चीन और हिन्दुस्तान

हम लिख चुके हैं कि शुरू में मेसोपोटैमिया, मिस्र और भूमध्य सागर के छोटे से टापू क्रीट में सभ्यता शुरू हुई और फैली। उसी ज़माने में चीन और हिन्दुस्तान में भी ऊँचे दरजे की सभ्यता शुरू हुई और अपने ढंग पर फैली।

दूसरी जगहों की तरह चीन में भी लोग बड़ी नदियों की घाटियों में आबाद हुए। यह उस जाति के लोग थे जिन्हें मंगोल कहते हैं। वे पीतल के खूबसूरत बर्तन बनाते थे और कुछ दिनों

बाद लोहे के बर्तन भी बनाने लगे। उन्होंने नहरें और अच्छी-अच्छी इमारतें बनाईं, और लिखने का एक नया ढंग निकाला। यह लिखावट हिन्दी, उर्दू या अँगरेजी से बिलकुल नहीं मिलती। यह एक किस्म की तसवीरदार लिखावट थी। हर एक शब्द और कभी-कभी छोटे-छोटे जुमलों की भी तसवीर होती थी। पुराने जमाने में मिस्र, क्रीट और बाबुल में भी तसवीरदार लिखावट होती थी। उसे अब चित्रलिपि कहते हैं। तुमने यह लिखावट अजायबघर की बाज किताबों में देखी होगी। मिस्र और पश्चिम के मुल्कों में यह लिखावट सिर्फ बहुत पुरानी इमारतों में पाई जाती है। उन मुल्कों में इस लिखावट का बहुत दिनों तक रिवाज नहीं रहा। लेकिन चीन में अब भी एक किस्म की तसवीरदार लिखावट मौजूद है और ऊपर से नीचे को लिखी जाती है। अँगरेजी या हिन्दी की तरह बाएँ से दाईं तरफ या उर्दू की तरह दाहिने से बाईं तरफ नहीं।

हिन्दुस्तान में बहुत सी पुराने जमाने की इमारतों के खंडहर शायद अभी तक ज़मीन में नीचे दबे पड़े हैं। जब तक उन्हें कोई खोद न निकाले तब तक हमें उनका पता नहीं चलता। लेकिन उत्तर में बाज बहुत पुराने खंडहरों की खुदाई हो चुकी है। यह तो हमें मालूम ही है कि बहुत पुराने जमाने में जब आर्य लोग हिन्दुस्तान में आए तो यहाँ द्रविड़ जाति के लोग रहते थे। और उनकी सभ्यता भी ऊँचे दरजे की थी। वे दूसरे मुल्क वालों के साथ व्यापार करते थे। वे अपनी बनाई हुई बहुत सी चीज़ें

मेसोपोटैमिया और मिस्र में भेजा करते थे। समुद्री रास्ते से वे खास कर चावल और मसाले और साखू की इमारती लकड़ियाँ भी भेजा करते थे। कहा जाता है कि मेसोपोटैमिया के 'उर' नामी शहर के बहुत से पुराने महल दक्षिणी हिन्दुस्तान से आई हुई साखू की लकड़ी के थे। यह भी कहा जाता है कि सोना, मोती, हाथीदाँत, मोर और बन्दर हिन्दुस्तान से पश्चिम के मुल्कों को भेजे जाते थे। इससे मालूम होता है कि उस ज़माने में हिन्दुस्तान और दूसरे मुल्कों में बहुत व्यापार होता था। व्यापार जभी बढ़ता है जब लोग सभ्य होते हैं।

उस ज़माने में हिन्दुस्तान और चीन में छोटी-छोटी रियासतें या राज थे। इनमें से किसी मुल्क में भी एक राज न था। हरएक छोटा शहर जिसमें कुछ गाँव और खेत होते थे एक अलग राज होता था। ये शहरी रियासतें कहलाती हैं। उस पुराने ज़माने में भी इनमें से बहुत सी रियासतों में पंचायती राज था। बादशाह न थे, राज का इंतजाम करने के लिए चुने हुए आदमियों की एक पंचायत होती थी। फिर भी बाज रियासतों में राजा का राज था। गोकि इन शहरी रियासतों की सरकारें अलग होती थीं, लेकिन कभी-कभी वे एक दूसरे की मदद किया करती थीं। कभी-कभी एक बड़ी रियासत कई छोटी रियासतों की अगुआ बन जाती थी।

चीन में कुछ ही दिनों बाद इन छोटी-छोटी रियासतों को



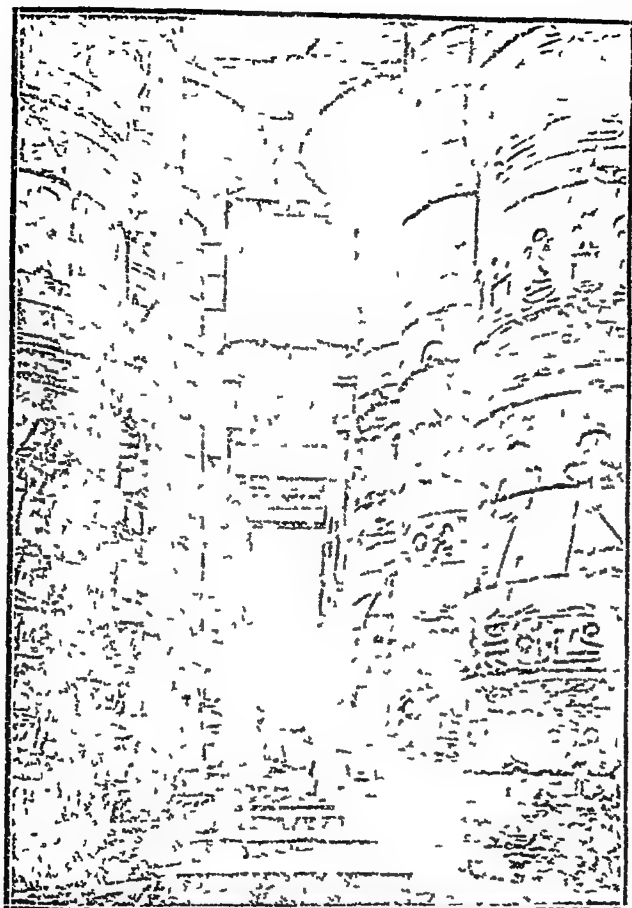
चीन की बड़ी दीवार

जगह एक बहुत बड़ा राज हो गया। इसी राज के ज़माने में चीन की बड़ी दीवार बनाई गई थी। तुमने इस बड़ी दीवार का हाल पढ़ा है। वह कितनी अजीबोग़रीब चीज़ है। वह समुद्र के किनारे से ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों तक बनाई गई थी, ताकि मंगोल जाति के लोग चीन में घुस कर न आ सकें। यह दीवार १४०० मील लम्बी, २० से ३० फीट तक ऊँची और २५ फीट चौड़ी है। थोड़ी-थोड़ी दूर पर किले और बुर्ज हैं। अगर ऐसी दीवार हिन्दुस्तान में बने तो वह उत्तर में लाहौर से लेकर दक्खिन में मदरास तक चली जायगी। वह दीवार अब भी मौजूद है और अगर तुम चीन जाओ तो उसे देख सकती हो।

: २२ :

## समुद्री सफ़र और व्यापार

फिनीशियन भी पुराने जमाने की एक सभ्य जाति थी। उसकी नस्ल भी वही थी जो यहूदियों और अरबों की है। वे खासकर एशियामाइनर के पश्चिमी किनारे पर रहते थे, जो आजकल का तुर्की है। उनके खास-खास शहर एकर, टायर और सिडोन भूमध्य समुद्र के किनारे पर थे। वे व्यापार के लिए लंबे सफर करने में मशहूर थे। वे भूमध्य समुद्र से होते हुए सीधे इंगलैंड तक चले



कार्नक के मंदिर के खंडहर

जाते थे। शायद वे हिन्दुस्तान भी आए हों।

अब हमें दो बड़ी-बड़ी बातों की दिलचस्प शुरुआत का पता चलता है। समुद्री सफर और व्यापार। आजकल की तरह उस ज़माने में अच्छे अगिनबोट और जहाज न थे। सब से पहिली नाव किसी दरख़्त के तने को खोखला कर बनी होगी। इनके चलाने के लिए डाँड़ों से काम लिया जाता था और कभी-कभी हवा के जोर के लिए तिपाल लगा देते थे। उस जमाने में समुद्र के सफर बहुत दिलचस्प और भयानक रहे होंगे। अरब सागर को एक छोटी-सी किश्ती पर, जो डाँड़ों और पालों से चलती हो, तै करने का खयाल तो करो। उनमें चलने फिरने के लिए बहुत कम जगह रहती होगी और हवा का एक हलका सा झोंका भी उसे तले ऊपर कर देता है। अकसर वह डूब भी जाती थी। खुले समुद्र में एक छोटी सी किश्ती पर निकलना बहादुरों ही का काम था। उसमें बड़े-बड़े खतरे थे और उनमें बैठने वाले आदमियों को महीनों तक ज़मीन के दर्शन न होते थे। अगर खाना कम पड़ जाता था तो उन्हें बीच समुद्र में कोई चीज़ न मिल सकती थी, जब तक कि वे किसी मछली या चिड़िया का शिकार न करें। समुद्र खतरे और जोखिम से भरा हुआ था। पुराने ज़माने के मुसाफिरों को जो खतरे पेश आते थे उसका बहुत कुछ हाल किताबों में मौजूद है।

लेकिन इस जोखिम के होते हुए भी लोग समुद्री सफर करते थे। मुमकिन है कुछ लोग इसलिए सफर करते हों कि उन्हें

बहादुरी के काम पसंद थे; लेकिन ज़्यादातर लोग सोने और दौलत के लालच से सफ़र करते थे। वे व्यापार करने जाते थे; माल खरीदते थे और बेचते थे; और धन कमाते थे। व्यापार क्या है? आज तुम बड़ी-बड़ी दूकानें देखती हो और उनमें जाकर अपनी ज़रूरत की चीज खरीद लेना कितना सहल है। लेकिन क्या तुमने ध्यान दिया है कि जो चीजें तुम खरीदती हो वे आती कहाँ से हैं? तुम इलाहाबाद की एक दूकान में एक ऊनी शाल खरीदती हो। वह कश्मीर से यहाँ तक सारा रास्ता तै करता हुआ आया होगा और ऊन कश्मीर और लद्दाख की पहाड़ियों में भेड़ों की खाल पर पैदा हुआ होगा। दाँत का मंजन जो तुम खरीदती हो शायद जहाज़ और रेलगाड़ियों पर होता हुआ अमरीका से आया हो। इसी तरह चीन, जापान, पैरिस या लंदन की बनी हुई चीजें भी मिल सकती हैं। विलायती कपड़े के एक छोटे से टुकड़े को ले लो जो यहाँ बाज़ार में बिकता है। रुई पहले हिन्दुस्तान में पैदा हुई और इंगलैंड भेजी गई। एक बड़े कारख़ाने ने इसे खरीदा, साफ किया, उस का सूत बनाया और तब कपड़ा तैयार किया। यह कपड़ा फिर हिन्दुस्तान आया और बाजार में बिकने लगा। बाजार में बिकने के पहिले इसे लौटा फेरी में कितने हज़ार मीलों का सफ़र करना पड़ा! यह नादानी की बात मालूम होती है कि हिन्दुस्तान में पैदा होने वाली रुई इतनी दूर इंगलैंड भेजी जाय, वहाँ उसका कपड़ा बने और फिर हिन्दुस्तान में आवे। इसमें कितना वक़्त, रुपया और मिहनत

बरबाद हो जाती है। अगर रुई का कपड़ा हिन्दुस्तान ही में बने तो वह ज़रूर ज़्यादा सस्ता और अच्छा होगा। तुम जानती हो कि हम विलायती कपड़े नहीं खरीदते। हम खद्दर पहिनते हैं क्योंकि जहाँ तक मुमकिन हो अपने मुल्क में पैदा होनेवाली चीजों को खरीदना अक़्लमन्दी की बात है। हम इसलिए भी खद्दर खरीदते और पहिनते हैं कि उससे उन ग़रीब आदमियों को मदद होती है जो कातते और बुनते हैं।

अब तुम्हें मालूम हो गया होगा कि आजकल व्यापार कितनी पेचीदा चीज़ है। बड़े-बड़े जहाज़ एक मुल्क का माल दूसरे देश को पहुँचाते रहते हैं। लेकिन पुराने ज़माने में यह बात न थी।

जब हम पहिले पहिल किसी एक जगह आबाद हुए तो हमें व्यापार करना बिलकुल न आता था। आदमी को अपनी जरूरत की चीजें आप बनानी पड़ती थीं। यह सच है कि उस वक़्त आदमी को बहुत चीज़ों की जरूरत न थी। जैसा तुमसे पहिले कह चुका हूँ। उसके बाद जाति में काम बाँटा जाने लगा। लोग तरह-तरह के काम करने लगे और तरह-तरह की चीज़ें बनाने लगे। कभी-कभी ऐसा होता होगा कि एक जाति के पास एक चीजें ज़्यादा होती होंगी और दूसरी जाति के पास दूसरी चीज। इसलिए अपनी-अपनी चीज़ों को बदल लेना उनके लिए बिलकुल सीधी बात थी। मिसाल के तौर पर एक जाति एक बोरे चने पर एक गाय दे देती होगी। उस ज़माने में रुपया न था। चीजों

का सिर्फ बदला होता था। इस तरह बदला शुरू हुआ। इसमें कभी-कभी दिक़्क़त पैदा होती होगी। एक बोरे चने या इसी तरह की किसी दूसरी चीज के लिए एक आदमी को एक गाय या दो भेड़ें ले जानी पड़ती होंगी लेकिन फिर भी व्यापार तरक़्क़ी करता रहा।

जब सोना और चाँदी निकलने लगा तो लोगों ने उसे व्यापार के लिए काम में लाना शुरू किया। उन्हें ले जाना ज़्यादा आसान था। और धीरे-धीरे माल के बदले में सोने या चाँदी देने का रिवाज निकल पड़ा। जिस अदमी को पहिले पहिल यह बात सूझी होगी वह बहुत होशियार होगा। सोने चाँदी के इस तरह काम में लाने से व्यापार करना बहुत आसान हो गया। लेकिन उस वक़्त भी आजकल की तरह सिक्के न थे। सोना तराज़ू पर तौल कर दूसरे आदमी को दे दिया जाता था। उसके बहुत दिनों के बाद सिक्के का रिवाज हुआ और इससे व्यापार और बदले में और भी सुभीता हो गया। तब तौलने की जरूरत न रही क्योंकि सभी आदमी सिक्के की कीमत जानते थे। आजकल सब जगह सिक्के का रिवाज है। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि निरा रुपया हमारे किसी काम का नहीं है। यह हमें अपनी जरूरत की दूसरी चीजों के लेने में मदद देता है। इससे चीजों का बदलना आसान हो जाता है। तुम्हें राजा मीनास का किस्सा याद होगा जिसके पास सोना तो बहुत था लेकिन खाने को कुछ नहीं। इसलिए रुपया बेकार है। जब तक हम उससे जरूरत की चीजें

न खरीद लें।

मगर आजकल भी तुम्हें देहातों में ऐसे लोग मिलेंगे जो सचमुच चीज़ों का बदला करते हैं और दाम नहीं देते। लेकिन आम तौर पर रुपया काम में लाया जाता है क्योंकि इसमें बहुत ज़्यादा सुभीता है। बाज नादान लोग समझते हैं कि रुपया खुद ही बहुत अच्छी चीज़ है और वह उसे खर्च करने के बदले बटोरते और गाड़ते हैं। इससे मालूम हो जाता है कि उन्हें यह नहीं मालूम है कि रुपए का रिवाज कैसे पड़ा और यह दरअसल क्या है।

: २३ :

## भाषा, लिखावट और गिन्ती

हम तरह-तरह की भाषाओं का पहिले ही जिक्र कर चुके हैं और दिखा चुके हैं कि उनका आपस में क्या नाता है। आज हम यह विचार करेंगे कि लोगों ने बोलना क्योंकर सीखा।

हमें मालूम है कि जानवरों की भी कुछ बोलियाँ होती हैं। लोग कहते हैं कि बंदरों में थोड़ी सी मामूली चीज़ों के लिए शब्द या बोलियाँ मौजूद हैं। तुमने बाज जानवरों की अजीब आवाज़ें भी सुनी होंगी जो वे डर जाने पर और अपने भाई बन्दों को किसी खतरे की खबर देने के लिए मुँह से निकालते हैं। शायद इसी तरह आदमियों में भी भाषा की शुरुआत हुई। शुरू में बहुत सीधी

सादी आवाजें रही होंगी। जब वे किसी चीज को देख कर डर जाते होंगे और दूसरों को उसकी खबर देना चाहते होंगे तो वे एक खास तरह की आवाज निकालते होंगे। शायद इसके बाद मजदूरों की बोलियाँ शुरू हुईं। जब बहुत से आदमी एक साथ कोई काम करते हैं तो वे मिल कर एक तरह का शोर मचाते हैं। क्या तुमने आदमियों को कोई चीज खींचते या कोई भारी बोझ उठाते नहीं देखा है? ऐसा मालूम होता है कि एक साथ हाँक लगाने से उन्हें कुछ सहारा मिलता है। यही बोलियाँ पहिले पहिल आदमी के मुँह से निकली होंगी।

धीरे-धीरे और शब्द बनते गए होंगे—जैसे, पानी, आग, घोड़ा, भालू। पहिले शायद सिर्फ नाम ही थे, क्रियाएँ न थीं। अगर कोई आदमी यह कहना चाहता होगा कि मैंने भालू देखा है तो वह एक शब्द "भालू" कहता होगा और बच्चों की तरह भालू की तरफ इशारा करता होगा। उस वक़्त लोगों में बहुत कम बातचीत होती होगी।

धीरे-धीरे भाषा तरक़्क़ी करने लगी। पहिले छोटे-छोटे जुमले पैदा हुए, फिर बड़े-बड़े। किसी जमाने में भी शायद सभी जातियों की एक ही भाषा न थी। लेकिन कोई जमाना ऐसा जरूर था जब बहुत सी तरह-तरह की भाषाएँ न थीं। मैं तुम से कह चुका हूँ कि तब थोड़ी सी भाषाएँ थीं। मगर बाद को, उन्हीं में से हरएक की कई-कई शाखें पैदा हो गईं।

सभ्यता शुरू होने के ज़माने तक, जिसका हम जिक्र कर

रहे हैं भाषा ने बहुत तरक़्क़ी कर ली थी। बहुत से गीत बन गए थे और भाट और गवैये उन्हें गाते थे। उस ज़माने में न लिखने का बहुत रिवाज था और न बहुत किताबें थीं। इसलिए लोगों को अब से कहीं ज़्यादा बातें याद रखनी पड़ती थीं। तुकबंदियों और छन्दों को याद रखना ज़्यादा सहल है। यही सबब है कि उन मुल्कों में जहाँ पुराने ज़माने में सभ्यता फैली हुई थी, तुकबंदियों और लड़ाई के गीतों का बहुत रिवाज था।

भाटों और गवैये को मरे हुए वीरों की बहादुरी के गीत बहुत अच्छे लगते थे। उस ज़माने में आदमी की ज़िन्दगी का खास काम लड़ना था, इसलिए उनके गीत भी लड़ाइयों ही के हैं। हिन्दुस्तान ही नहीं, दूसरे मुल्कों में भी, यही रिवाज था।

लिखने की शुरुआत भी बहुत मजेदार है। मैं चीनी लिखावट का बयान कर चुका हूँ। सभी मुल्कों में लिखना तसवीरों से शुरू हुआ होगा। जो आदमी मोर के बारे में कुछ कहना चाहता होगा, उसे मोर की तसवीर या खाका बनाना पड़ता होगा। हाँ, इस तरह कोई बहुत ज़्यादा न लिख सकता होगा। धीरे धीरे तसवीरें सिर्फ निशानियाँ रह गई होंगी। इसके बहुत दिनों पीछे वर्णमाला निकली होगी और उसका रिवाज हुआं होगा। इससे लिखना बहुत सहल हो गया और जल्दी-जल्दी तरक़्क़ी होने लगी।

अदद और गिन्ती का निकलना भी बड़े मार्के की बात रही होगी। गिन्ती के बगैर कोई रोजगार करने का खयाल भी नहीं किया जा सकता। जिस आदमी ने गिन्ती निकाली वह बड़े दिमाग़ का या बहुत होशियार आदमी रहा होगा। योरप में पहले अंक बहुत बेढंगे थे। रोमन अंकों को तुम जानती हो I, II, III, IV, V, VI, VII, VIII, IX, X, इत्यादि। ये बहुत बेढंगे हैं और इन्हें काम में लाना मुश्किल है। आजकल हम, हरएक भाषा में, जिन अंकों को काम में लाते हैं वे बहुत अच्छे हैं। मैं १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १० वग़ैरा अंकों को कह रहा हूँ। इन्हें अरबी अंक कहते हैं क्योंकि योरप वालों ने उन्हें अरब जाति से सीखा। लेकिन अरब वालों ने उन्हें हिन्दुस्तानियों से सीखा था। इसलिये उन्हें हिन्दुस्तानी अंक कहना ज़्यादा मुनासिब होगा।

लेकिन मैं तो सरपट दौड़ा जा रहा हूँ। अभी हम अरब जाति तक नहीं पहुचे हैं।

: २४ :

## आदमियों के अलग-अलग दरजे

लड़कों, लड़कियों और सयानों को भी इतिहास अक्सर एक अजीब ढंग से पढ़ाया जाता है। उन्हें राजाओं और दूसरे आदमियों के नाम और लड़ाइयों की तारीखें याद करनी पड़ती हैं।

लेकिन दरअसल इतिहास लड़ाइयों का, या थोड़े से राजाओं या सेनापतियों का नाम नहीं है। इतिहास का काम यह है कि हमें किसी मुल्क के आदमियों का हाल बतलाए, कि वे किस तरह रहते थे, क्या करते थे और क्या सोचते थे, किस बात से उन्हें खुशी होती थी, किस बात से रंज होता था, उनके सामने क्या-क्या कठिनाइयाँ आईं और उन लोगों ने कैसे उनपर काबू पाया। अगर हम इतिहास को इस तरीके से पढ़ें तो हमें उससे बहुत सी बातें मालूम होंगी। अगर उसी तरह की कोई कठिनाई या आफत हमारे सामने आए, तो इतिहास के जानने से हम उसपर विजय पा सकते हैं। पुराने ज़माने का हाल पढ़ने से हमें यह पता चल जाता है, कि लोगों की हालत पहिले से अच्छी है या खराब, उन्होंने कुछ तरक़्की की है या नहीं।

यह सच है कि हमें पुराने जमाने के मर्दों और औरतों के चरित्र से कुछ न कुछ सबक लेना चाहिए। लेकिन हमें यह भी जानना चाहिए कि पुराने ज़माने में भिन्न-भिन्न जाति के आदमियों का क्या हाल था।

मैं तुम्हें बहुत से खत लिख चुका हूँ। यह चौबीसवाँ खत है लेकिन अब तक हमने बहुत पुराने ज़माने ही की चर्चा की है, जिसके बारे में हमें थोड़ी ही सी बातें मालूम हैं। इसे हम इतिहास नहीं कह सकते। हम इसे इतिहास की शुरुआत, या इतिहास का उदय कह सकते हैं। जल्द ही हम बाद के ज़माने का ज़िक्र करेंगे, जिससे हम ज़्यादा वाकिफ हैं और जिसे ऐतिहासिक काल कह

सकते हैं। लेकिन उस पुरानी सभ्यता का ज़िक्र छोड़ने के पहिले आओ हम उसपर फिर एक निगाह डालें और इसका पता लगावें कि उस जमाने में आदमियों की कौन-कौन सी किस्में थीं।

हम यह पहिले देख चुके हैं कि पुरानी जातियों के आदमियों ने तरह-तरह के काम करने शुरू किए। काम या पेशे का बँटवारा हो गया। हमने यह भी देखा है कि जाति के सरपंच या सरगना ने अपने परिवार को दूसरों से अलग कर लिया और काम का इंतजाम करने लगा। वह ऊँचे दरजे का आदमी बन बैठा, या यों समझ लो कि उसका परिवार औरों से ऊँचे दरजे में आ गया। इस तरह आदमियों के दो दरजे हो गए—एक इंतजाम करता था और हुक्म देता था, और दूसरा असली काम करता था। और यह तो ज़ाहिर ही है कि इंतजाम करनेवाले दरजे का इख़्तियार ज़्यादा था और इसके जोर से उन्होंने वह सब चीज़ें ले लीं जिन पर वह हाथ बढ़ा सके। वे ज़्यादा मालदार हो गए और काम करनेवालों की कमाई को दिन-दिन ज़्यादा हड़पने लगे।

इसी तरह ज्यों-ज्यों काम की बाँट होती गई और और दरजे पैदा होते गए। राजा और उसका परिवार तो था ही, उसके दरबारी भी पैदा हो गए। वे मुल्क का इंतजाम करते थे और दुश्मनों से उसकी हिफाजत करते थे। वे आमतौर पर कोई दूसरा काम न करते थे।

मंदिरों के पुजारियों और नौकरों का एक दूसरा दरजा था। उस ज़माने में इन लोगों का बहुत रोबदाब था और हम उनका ज़िक्र फिर करेंगे।

तीसरा दरजा व्यापारियों का था। ये वे सौदागर लोग थे जो एक मुल्क का माल दूसरे मुल्क में ले जाते थे, माल खरीदते थे, और बेचते थे और दूकानें खोलते थे।

चौथा दरजा कारीगरों का था, जो हरएक किस्म की चीज़ें बनाते थे, सूत कातते और कपड़े बुनते थे, मिट्टी के बरतन बनाते थे, पीतल के बरतन गढ़ते थे, सोने और हाथीदाँत की चीज़ें बनाते थे और बहुत से और काम करते थे। ये लोग अकसर शहरों में या शहरों के नजदीक रहते थे लेकिन बहुत से देहातों में भी बसे हुए थे।

सबसे नीचा दरजा उन किसानों और मजदूरों का था जो खेतों में या शहरों में काम करते थे। इस दरजे में सबसे ज़्यादा आदमी थे। और सभी दरजों के लोग उन्हीं पर दाँत लगाए रहते थे और उनसे कुछ न कुछ ऐंठते रहते थे।

## : २५ :

## राजा, मन्दिर और पुजारी

हमने पिछले खत में लिखा था कि आदमियों के पाँच दरजे बन गए। सबसे बड़ी जमाअत मजदूर और किसानों की थी।

किसान जमीन जोतते थे और खाने की चीजें पैदा करते थे। अगर किसान या और लोग ज़मीन न जोतते और खेती न होती तो या तो अनाज पैदा ही न होता, या होता तो बहुत कम। इसलिए किसानों का दरजा बहुत जरूरी था। वे न होते तो सब लोग भूखों मर जाते। मजदूर भी खेतों या शहरों में बहुत फायदे के काम करते थे। लेकिन इन अभागों को इतना जरूरी काम करने और हरएक आदमी के काम आने पर भी मुश्किल से गुजारे भर को मिलता था। उनकी कमाई का बड़ा हिस्सा दूसरों के हाथ पड़ जाता था खास कर राजा और उसके दरजे के दूसरे आदमियों और अमीरों के हाथ। उसकी टोली के दूसरे लोग जिन में दरबारी भी शामिल थे उन्हें बिलकुल चूस लेते थे।

हम पहिले लिख चुके हैं कि राजा और उसके दरबारियों का बहुत दबाव था। शुरू में जब जातियाँ बनीं, तो जमीन किसी एक आदमी की न होती थी, जाति भर की होती थी। लेकिन जब राजा और उसकी टोली के आदमियों की ताक़त बढ़ गई तो वे कहने लगे कि जमीन हमारी है। वे जमींदार हो गए, और बेचारे किसान जो छाती फाड़ कर खेती-बारी करते थे, एक तरह से महज़ उनके नौकर हो गए। फल यह हुआ कि किसान खेती करके जो कुछ पैदा करते थे वह बँट जाता था और बड़ा हिस्सा ज़मींदार के हाथ लगता था।

बाज़ मन्दिरों के कब्जे में भी जमीन थी, इसलिए पुजारी

भी ज़मींदार हो गए। मगर ये मन्दिर और उनके पुजारी थे कौन? मैं एक खत में लिख चुका हूँ कि शुरू में जंगली आदमियों को ईश्वर और मजहब का खयाल इस वजह से पैदा हुआ कि दुनिया की बहुत सी बातें उनकी समझ में न आती थीं और जिस बात को वे समझ न सकते थे, उससे डरते थे। उन्होंने हरएक चीज़ को देवता या देवी बना लिया, जैसे नदी, पहाड़, सूरज, पेड़, जानवर और बाज़ ऐसी चीज़ें जिन्हें वे देख तो न सकते थे पर कयास करते थे, जैसे भूत-प्रेत। वे इन देवताओं से डरते थे, इसलिए उन्हें हमेशा यह खयाल होता था कि वे उन्हें सज़ा देना चाहते हैं। वे अपने देवताओं को भी अपनी ही तरह क्रोधी और निर्दयी समझते थे और उनका गुस्सा ठंडा करने या उन्हें खुश करने के लिए कुरबानियाँ किया करते थे।

इन्हीं देवताओं के लिए मन्दिर बनने लगे। मन्दिर के भीतर एक मंडप होता था जिसमें देवता की मूर्ति होती थी। वे किसी ऐसी चीज की पूजा कैसे करते जिसे वे देख ही न सकें। यह ज़रा मुश्किल है। तुम्हें मालूम है कि छोटा बच्चा उन्हीं चीजों का ख़याल कर सकता है जिन्हें वह देखता है। शुरू ज़माने के लोगों की हालत कुछ बच्चों की सी थी। चूँकि वे मूर्ति के बिना पूजा ही न कर सकते थे, वे अपने मन्दिरों में मूर्तियाँ रखते थे। यह कुछ अजीब बात है कि ये मूर्तियाँ बराबर डरावने, कुरूप जानवरों की होती थीं, या कभी-कभी आदमी और जानवर

की मिली हुई। मिस्र में एक ज़माने में बिल्ली की पूजा होती थी, और मुझे याद आता है कि एक दूसरे जमाने में बन्दर की। समझ में नहीं आता कि लोग ऐसी भयानक मूर्तियों की पूजा क्यों करते थे। अगर मूर्ति ही पूजना चाहते थे तो उसे खूबसूरत क्यों न बनाते थे? लेकिन शायद उनका खयाल था कि देवता डरावने होते हैं, इसीलिए वे उनकी ऐसी भयानक मूर्तियाँ बनाते थे।

उस जमाने में शायद लोगों का यह खयाल न था कि ईश्वर एक है, या वह कोई बड़ी ताक़त है, जैसा लोग आज समझते हैं। वे सोचते होंगे कि बहुत से देवता और देवियाँ हैं, जिनमें शायद कभी-कभी लड़ाइयाँ भी होती हों। अलग-अलग शहरों और मुल्कों के देवता भी अलग-अलग होते थे।

मन्दिरों में बहुत से पुजारी और पुजारिनें होती थीं। पुजारी लोग आमतौर पर लिखना पढ़ना जानते थे और दूसरे आदमियों से ज़्यादा पढ़े लिखे होते थे। इसलिए राजा लोग उनसे सलाह लिया करते थे। उस ज़माने में किताबों को लिखना या नक़ल करना पुजारियों ही का काम था। उन्हें कुछ विद्यायें आती थीं, इसलिए वे पुराने ज़माने के ऋषि समझे जाते थे। वे हकीम भी होते थे और अकसर, महज यह दिखाने के लिए कि वे लोग कितने पहुँचे हुए हैं, वे लोगों के सामने जादू के करतब किया करते थे। लोग सीधे और मूर्ख तो थे ही; वे पुजारियों को जादूगर समझते थे और उनसे थर-थर काँपते थे।

पुजारी लोग हर तरह से आदमियों की ज़िन्दगी के कामों में मिले-जुले रहते थे। वही उस ज़माने के अक़्लमन्द आदमियों में थे और हरएक आदमी मुसीबत या बीमारी में उनके पास जाता था। वे आदमियों के लिए बड़े-बड़े त्योहारों का इंतज़ाम करते थे। उस ज़माने में पत्रे न थे, खास कर ग़रीब आदमियों के लिए। वे त्योहारों ही से दिनों का हिसाब लगाते थे।

पुजारी लोग प्रजा को ठगते और धोखा देते थे। लेकिन इसके साथ कई बातों में उनकी मदद भी करते और उन्हें आगे भी बढ़ाते थे।

मुमकिन है कि जब लोग पहिले पहिल शहरों में बसने लगे हों तो उन पर राज करनेवाले राजा न रहे हों, पुजारी ही रहे हों। बाद को राजा आए होंगे और चूँकि ये लोग लड़ने में ज़्यादा होशियार थे, उन्होंने पुजारियों को निकाल दिया होगा। बाज जगहों में एक ही आदमी राजा और पुजारी दोनों ही होता था, जैसे मिस्र के फिरऊन। फिरऊन लोग अपनी जिन्दगी ही में आधे देवता समझे जाने लगे थे, और मरने के बाद तो वे पूरे देवताओं की तरह पूजने लगे।

: २६ :

## पीछे की तरफ़ एक नज़र

तुम मेरी चिट्ठियों से ऊब गई होगी! ज़रा दम लेना चाहती होगी। खैर, कुछ अरसे तक मैं तुम्हें नई बातें न लिखूँगा। हमने थोड़े से खतों में हजारों लाखों बरसों की दौड़ लगा डाली है। मैं चाहता हूँ कि जो कुछ हम देख आए हैं उस पर तुम ज़रा गौर करो। हम उस ज़माने से चले थे जब ज़मीन सूरज ही का एक हिस्सा थी, तब वह उससे अलग हो कर धीरे-धीरे ठंडी हो गई। उसके बाद चाँद ने उछाल मारी और जमीन से निकल भागा—मुद्दतों तक यहाँ कोई जानदार न था। तब लाखों, करोड़ों बरसों में, धीरे-धीरे जानदारों की पैदाइश हुई। दस लाख बरसों की मुद्दत कितनी होती है, इसका तुम्हें कुछ अंदाजा होता है? इतनी बड़ी मुद्दत का अंदाज़ा करना निहायत मुश्किल है। तुम अभी कुछ दस बरस की हो और कितनी बड़ी हो गई हो! खासी कुमारी हो गई हो। तुम्हारे लिए सौ साल ही बहुत हैं। फिर कहाँ हज़ार, और कहाँ लाख जिसमें सौ हज़ार होते हैं! हमारा छोटा सा सिर इसका ठीक अंदाजा कर ही नहीं सकता। लेकिन हम अपने दिल में कितनी शान की लेते हैं और जरा-जरा सी बातों पर झुँझला उठते हैं, और घबरा जाते हैं। लेकिन दुनिया के इस पुराने इतिहास में इन छोटी-छोटी बातों की हकीकत ही क्या? इतिहास

के इन अपार युगों का हाल पढ़ने और उन पर विचार करने से हमारी आँखें खुल जायँगी और हम छोटी-छोटी बातों से परेशान न होंगे।

जरा उन वेशुमार मुद्दतों का खयाल करो जब किसी जानदार का नाम तक न था। फिर उस लंबे जमाने को सोचो जब सिर्फ समुद्र के जंतु ही थे। दुनिया में कहीं आदमी का पता नहीं है। जानवर पैदा होते हैं और लाखों साल तक वेखटके इधर उधर कुलेलें किया करते हैं। कोई आदमी नहीं है जो उनका शिकार कर सके। और अंत में जब आदमी पैदा भी होता है तो बिलकुल बित्ते भर का, नन्हा सा, सब जानवरों से कमज़ोर! धीरे-धीरे हज़ारों बरसों में वह ज़्यादा मजबूत और होशियार हो जाता है, यहाँ तक कि वह दुनिया के जानवरों का मालिक हो जाता है। और दूसरे जानवर उसके तावेदार और ग़ुलाम हो जाते हैं और उसके इशारों पर चलने लगते हैं।

तब सभ्यता के फैलने का ज़माना आता है। हम इसकी शुरुआत देख चुके हैं। अब हम यह देखने की कोशिश करेंगे कि आगे चलकर उसकी क्या हालत हुई। अब हमें लाखों बरसों का जिक्र करना नहीं है। पिछले खतों में हम तीन-चार हजार साल पहले के जमाने तक पहुँच गए थे। लेकिन इधर के तीन-चार हजार बरसों का हाल हमें उधर के लाखों बरसों से ज़्यादा मालूम है। आदमी के इतिहास की तरक़्की दरअसल इन्हीं तीन

हजार बरसों में हुई है। जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम इस इतिहास के बारे में बहुत कुछ पढ़ोगी। मैं इसके बारे में कुछ थोड़ा सा लिखूँगा जिससे तुम्हें कुछ खयाल हो जाय कि इस छोटी सी दुनिया में आदमी पर क्या-क्या गुजरी।

: २७ :

# पत्थर हो जाने वाली मछलियों की तसवीरें

आज मैं तुम्हें कुछ तसवीरों के पोस्टकार्ड भेज रहा हूँ। मुझे उम्मीद है कि तुम इन्हें मेरे लंबे और रूखे सूखे खतों से ज़्यादा पसन्द करोगी। ये तसवीरें उन पुरानी मछलियों की हड्डियों की हैं जो लन्दन के साउथ केनसिंग्टन के अजायबघर में रक्खी हुई हैं। तुमने इन हड्डियों को वहाँ देखा होगा। बहर-हाल इन तसवीरों से तुम्हें कुछ खयाल हो जायगा कि पुरानी मछलियों की हड्डियाँ कैसी होती हैं।

जैसा मैं तुमसे पहिले कह चुका हूँ ये पुराने जानवर और पौधों के अवशेष हैं और दूसरी जगहों में पाए गए हैं। इन्हें अंग्रेज़ी में 'फ़ॉसिल' कहते हैं। जानवरों के बदन का नर्म हिस्सा तो सड़ गल गया लेकिन सख़्त हिस्से और हड्डियाँ हजारों साल गुजर जाने पर भी बची हुई हैं। उनमें से ज़्यादातर तो समुद्र

की तह में नर्म कीचड़ से ढकी हुई थीं। नर्म मिट्टी एक जमाना गुजर जाने के बाद कड़ी हो गई होगी और समुद्र की तह बाहर निकल कर जमीन हो गई होगी। इसलिए ये हड्डियाँ हमें अब खुश्क जमीन पर मिलती हैं।

इनमें से बाज 'फॉसिल' तसवीरों में उसी तरह दिखाई गई हैं जैसी वे पहाड़ों में मिली थीं। वे बहुत साफ नहीं हैं। उनमें से दो नक़ली नमूने हैं। यानी वे इस तरह बनाई गई हैं कि असली हड्डियों से मिल जायँ।

इन तसवीरों में से एक मछली के सिर्फ दाँत की हड्डी की है।

मेरे खयाल में पेज २५ और ३१ पर दी गई तसवीरें सबसे ज़्यादा दिलचस्प हैं। इनसे साफ़-साफ जाहिर होता है कि चट्टान पर मछलियों का निशान कैसे पड़ गया। इन्हीं निशानों से लाखों साल गुज़र जाने पर भी हम कह सकते हैं कि वे किसी जमाने में मौजूद थीं।

---

: २८ :

# 'फ़ॉसिल' और पुराने खंडहर

मैंने अरसे से तुम्हें कोई खत नहीं लिखा। पिछले दो खतों में हमने उस पुराने जमाने पर एक नजर डाली थी जिसका हम अपने खतों में चर्चा कर रहे हैं। मैंने तुम्हें पुरानी मछलियों की हड्डियों के पोस्टकार्ड भेजे थे जिससे तुम्हें खयाल हो जाय कि ये 'फॉसिल' कैसे होते हैं। मसूरी में जब तुमसे मेरी मुलाकात हुई थी तो मैंने तुम्हें दूसरे किस्म के 'फॉसिल' की तसवीरें दिखाई थीं।

पुराने रेंगनेवाले जानवरों की हड्डियों को खास तौर से याद रखना। साँप, छिपकिली, मगर और कछुवे वगैरा जो आज भी मौजूद हैं, रेंगने वाले जानवर हैं। पुराने जमाने के रेंगनेवाले जानवर भी इसी जाति के थे पर कद में बहुत बड़े थे और उनकी शक्ल में भी फर्क था। तुम्हें उन देव के से जंतुओं की याद होगी जिन्हें हमने साउथ केनसिंगटन के अजायबघर में देखा था। उनमें से एक ३० या ४० फीट लम्बा था। एक किस्म का मेंढक भी था जो आदमी से बड़ा था और एक कछुआ भी उतना ही बड़ा था। उस जमाने में बड़े भारी-भारी चमगादड़ उड़ा करते थे और एक जानवर जिसे इगुआनोडान कहते हैं, खड़ा होने से एक छोटे से पेड़ के बराबर हो जाता था।

तुमने खान से निकले हुए पौधे भी पत्थर की सूरत में

देखे थे। चट्टानों में 'फर्न' और पत्तियों और ताड़ों के खूबसूरत निशान थे।

रेंगनेवाले जानवरों के पैदा होने के बहुत दिन बाद वे जानवर पैदा हुए जो अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं। ज़्यादातर जानवर जिन्हें हम देखते हैं, और हम लोग भी, इसी जाति में हैं। पुराने जमाने के दूध पिलाने वाले जानवर हमारे आजकल के बाज जानवरों से बहुत मिलते थे। उनका कद अकसर बहुत बड़ा होता था लेकिन रेंगनेवाले जानवरों के बराबर नहीं। बड़े-बड़े दाँतों वाले हाथी और बड़े डील-डौल के भालू भी होते थे।

तुमने आदमी की हड्डियाँ भी देखी थीं। इन हड्डियों और खोपड़ियों के देखने में भला क्या मजा आता। इससे ज़्यादा दिलचस्प वे चकमक के औज़ार थे जिन्हें शुरू ज़माने के लोग काम में लाते थे।

मैंने तुम्हें मिस्र के मकबरों और ममियों की तसवीरें भी दिखाई थीं। तुम्हें याद होगा इनमें से बाज बहुत खूबसूरत थीं। लकड़ी की ताबूतों पर लोगों की बड़ी-बड़ी कहानियाँ लिखी हुई थीं। थीब्स के मिस्री मक़बरों की दीवारों की तसवीरें बहुत ही खूबसूरत थीं।

तुमने मिस्र के थीब्स नामी शहर में महलों और मन्दिरों के खंडहरों की तसवीरें देखी थीं। कितनी बड़ी-बड़ी इमारतें और कितने भारी-भारी खम्भे थे। थीब्स के पास ही मेमन की बहुत बड़ी मूर्ति है। ऊपरी मिस्र में कार्नक के पुराने मन्दिरों और

इमारतों की तसवीरें भी थीं। इन खंडहरों से भी तुम्हें कुछ अन्दाजा हो सकता है कि मिस्र के पुराने आदमी मेमारी के काम में कितने होशियार थे। अगर उन्हें इंजीनियरी का अच्छा ज्ञान न होता तो वे ये मन्दिर और महल कभी न बना सकते।

हमने सरसरी तौर पर पीछे लिखी हुई बातों पर एक नजर डाल ली। इसके बाद के खत में हम और आगे चलेंगे।

: २६ :

## आर्यों का हिन्दुस्तान में आना

अब तक हमने बहुत ही पुराने जमाने का हाल लिखा है। अब हम यह देखना चाहते हैं कि आदमी ने कैसे तरक्की की और क्या-क्या काम किए। उस पुराने जमाने को इतिहास के पहिले का ज़माना कहते हैं। क्योंकि उस जमाने का हमारे पास कोई सच्चा इतिहास नहीं है। हमें बहुत कुछ अंदाज से काम लेना पड़ता है। अब हम इतिहास के शुरू में पहुँच गए हैं।

पहिले हम यह देखेंगे कि हिन्दुस्तान में कौन-कौन सी बातें हुईं। हम पहिले ही देख चुके हैं कि बहुत पुराने जमाने में मिस्र की तरह हिन्दुस्तान में भी सभ्यता फैली हुई थी। रोजगार होता था और यहाँ के जहाज हिन्दुस्तानी चीजों को मिस्र, मेसोपोटैमिया और दूसरे देशों को ले जाते थे। उस जमाने में

हिन्दुस्तान के रहने वाले द्रविड़ कहलाते थे। ये वही लोग हैं जिनकी संतान आजकल दक्षिणी हिन्दुस्तान में मदरास के आसपास रहती हैं।

उन द्रविड़ों पर आर्यों ने उत्तर से आकर हमला किया, उस जमाने में मध्य एशिया में बेशुमार आर्य रहते होंगे। मगर वहाँ सब का गुज़र न हो सकता था इसलिए वे दूसरे मुल्कों में फैल गए। बहुत से ईरान चले गए और बहुत से यूनान तक और उससे भी बहुत पश्चिम तक निकल गए। हिन्दुस्तान में भी उनके दल के दल कश्मीर के पहाड़ों को पार करके आए। आर्य एक मजबूत लड़ने वाली जाति थी और उसने द्रविड़ों को भगा दिया। आर्यों के रेले पर रेले उत्तर-पश्चिम से हिन्दुस्तान में आए होंगे। पहिले द्रविड़ों ने उन्हें रोका लेकिन जब उनकी तादाद बढ़ती ही गई तो वे द्रविड़ों के रोके न रुक सके। बहुत दिनों तक आर्य लोग उत्तर में सिर्फ़ अफ़ग़ानिस्तान और पंजाब में रहे। तब वे और आगे बढ़े और उस हिस्से में आए जो अब संयुक्त प्रान्त कहलाता है। जहाँ हम रहते हैं। वे इसी तरह बढ़ते-बढ़ते मध्य भारत के विन्ध्य पहाड़ तक चले गए। उस जमाने में इन पहाड़ों को पार करना मुश्किल था क्योंकि वहाँ घने जंगल थे। इसलिए एक मुद्दत तक आर्य लोग विंध्य पहाड़ के उत्तर तक ही रहे। बहुतों ने तो इन पहाड़ियों को पार कर लिया और दक्षिण में चले गए। लेकिन उनके झुंड के झुंड न जा सके इसलिए दक्षिण द्रविड़ों का ही देश बना रहा।

आर्यों के हिंदुस्तान में आने का हाल बहुत दिलचस्प है। पुरानी संस्कृत किताबों में तुम्हें उनका बहुत-सा हाल मिलेगा। उनमें से बाज़ किताबें जैसे वेद उसी ज़माने में लिखी गई होंगी। ऋग्वेद सबसे पुराना वेद है और उससे तुम्हें कुछ अंदाजा हो सकता है कि उस वक्त आर्य लोग हिन्दुस्तान के किस हिस्से में आबाद थे। दूसरे वेदों से और पुराणों और दूसरी संस्कृत की पुरानी किताबों से हमें मालूम होता है कि आर्य फैलते चले जाते थे। शायद इन पुरानी किताबों के बारे में तुम्हारी जानकारी बहुत कम है। जब तुम बड़ी होगी तो तुम्हें और बातें मालूम होंगी। लेकिन अब भी तुम्हें बहुत सी कथायें मालूम हैं जो पुराणों से ली गई हैं। इसके बहुत दिनों बाद रामायण लिखी गई और उसके बाद महाभारत।

इन किताबों से हमें मालूम होता है कि जब आर्य लोग सिर्फ पंजाब और अफ़गानिस्तान में रहते थे, तो वे इस हिस्से को ब्रह्मावर्त कहते थे। अफ़गानिस्तान को उस समय गान्धार कहते थे। तुम्हें महाभारत में गांधारी का नाम याद है। उसका यह नाम इसलिए पड़ा कि वह गांधार या अफ़गानिस्तान की रहनेवाली थी। अफ़गानिस्तान अब हिन्दुस्तान से अलग है लेकिन उस ज़माने में दोनों एक थे।

जब आर्य लोग और नीचे, गंगा और जमुना के मैदानों में आए, तो उन्होंने उत्तरी हिन्दुस्तान का नाम आर्यावर्त

रक्खा।

पुराने जमाने की दूसरी जातियों की तरह वे भी नदियों के किनारे के ही शहरों में आबाद हुए। काशी या बनारस, प्रयाग और बहुत से दूसरे शहर नदियों के ही किनारे हैं।

: ३० :

## हिन्दुस्तान के आर्य कैसे थे

आर्यों को हिन्दुस्तान आए बहुत ज़माना हो गया। सब के सब तो एक साथ आए नहीं होंगे, उनके फ़ौजों पर फ़ौजें, जाति पर जाति और कुटुम्ब पर कुटुम्ब सैकड़ों बरस तक आते रहे होंगे। सोचो कि वे किस तरह लंबे क़ाफिलों में सफ़र करते हुए, गृहस्थी की सब चीज़ें गाड़ियों और जानवरों पर लादे हुए आए होंगे। वह आजकल के यात्रियों की तरह नहीं आए। वे फिर लौट कर जाने के लिए नहीं आए थे। वे यहाँ रहने के लिए या लड़ने और मर जाने के लिए आए थे। उनमें से ज़्यादातर तो उत्तरपश्चिम की पहाड़ियों को पार करके आए, लेकिन शायद कुछ लोग समुद्र से ईरान की खाड़ी होते हुए आए और अपने छोटे-छोटे जहाज़ों में सिंध नदी तक चले गए।

ये आर्य कैसे थे? हमें उनके बारे में उनकी लिखी हुई किताबों से बहुत सी बातें मालूम होती हैं। उनमें से कुछ

किताबें, जैसे वेद, शायद दुनिया की सबसे पुरानी किताबों में हैं। ऐसा मालूम होता है कि शुरू में वे लिखी नहीं गई थीं। उन्हें लोग जबानी याद करके दूसरों को सुनाते थे। वे ऐसी सुन्दर संस्कृत में लिखी हुई हैं कि उनके गाने में मजा आता है। जिस आदमी का गला अच्छा हो और वह संस्कृत भी जानता हो उसके मुँह से वेदों का पाठ सुनने में अब भी आनन्द आता है। हिन्दू वेदों को बहुत पवित्र समझते हैं। लेकिन "वेद" शब्द का मतलब क्या ? इसका मतलब है "ज्ञान"। और वेदों में वह सब ज्ञान जमा कर दिया गया है जो उस जमाने के ऋषियों और मुनियों ने हासिल किया था। उस ज़माने में रेल गाड़ियाँ और तार और सिनेमा न थे। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उस जमाने के आदमी मूर्ख थे। कुछ लोगों का तो यह खयाल है कि पुराने जमाने में लोग जितने अक़्लमंद होते थे, उतने अब नहीं होते। लेकिन चाहे वे ज़्यादा अक़्लमंद रहे हों या न रहे हों उन्होंने बड़े मार्के की किताबें लिखीं जो आज भी बड़े आदर से देखी जाती हैं। इसीसे मालूम होता है पुराने ज़माने के लोग कितने बड़े थे।

मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि वेद पहिले लिखे न गए थे। लोग उन्हें याद कर लिया करते थे और इस तरह वे एक पुश्त से दूसरी पुश्त तक पहुँचते गए। उस ज़माने में लोगों की याद रखने की ताकत भी बहुत अच्छी रही होगी। हममें से अब कितने आदमी ऐसे हैं जो पूरी किताबें याद कर सकते हैं ?

जिस ज़माने में वेद लिखे गए उसे वेद का ज़माना कहते हैं। पहिला वेद ऋग्वेद है। इसमें वे भजन और गीत हैं जो पुराने आर्य गाया करते थे। वे लोग बहुत खुश मिज़ाज रहे होंगे, रूखे और उदास नहीं। बल्कि जोश और हौसले से भरे हुए। अपनी तरंग में वे अच्छे-अच्छे गीत बनाते थे और अपने देवताओं के सामने गाते थे।

उन्हें अपनी जाति और अपने आप पर बड़ा ग़रूर था। "आर्य" शब्द के माने हैं "शरीफ आदमी" या "ऊँचे दरजे का आदमी"। और उन्हें आज़ाद रहना बहुत पसंद था। वे आजकल की हिन्दुस्तानी संतानों की तरह न थे जिनमें हिम्मत का नाम नहीं और न अपनी आजादी के खो जाने का रंज है। पुराने जमाने के आर्य मौत को ग़ुलामी या बेइज़्जती से अच्छा समझते थे।

वे लड़ाई के फन में बहुत होशियार थे। और कुछ-कुछ विज्ञान भी जानते थे। मगर खेती-बारी का ज्ञान उन्हें बहुत अच्छा था। खेती की कद्र करना उनके लिए स्वाभाविक बात थी। और इसलिए जिन चीज़ों से खेती को फायदा होता था उनकी भी वे बहुत कद्र करते थे। बड़ी-बड़ी नदियों से उन्हें पानी मिलता था इसलिए वे उन्हें प्यार करते थे और उन्हें अपना दोस्त और मुरब्बी समझते थे। गाय और बैल से भी उन्हें अपनी खेती में और रोजमर्रा के कामों में बड़ी मदद मिलती थी; क्योंकि गाय दूध देती थी जिसे वे बड़े शौक से पीते थे।

इसलिए वे इन जानवरों की बहुत हिफाजत करते थे और उनकी तारीफ के गीत गाते थे। उसके बहुत दिनों बाद लोग यह तो भूल गए कि गाय की इतनी हिफाजत क्यों की जाती थी और उसकी पूजा करने लगे। भला सोचो तो इस पूजा से किसका क्या फायदा था। आर्यों को अपनी जातिका बड़ा घमंड था और इसलिए वे हिन्दुस्तान की दूसरी जातियों में मिलजुल जाने से डरते थे। इसलिए उन्होंने ऐसे कायदे और कानून बनाये कि मिलावट न होने पाए। इसी वजह से आर्यों को दूसरी जातियों में विवाह करना मना था। बहुत दिनों के बाद इसीने आजकल की जातियाँ पैदा कर दीं। अब तो यह रिवाज बिलकुल ढोंग हो गया है। कुछ लोग दूसरों के साथ खाने या उन्हें छूने से भी डरते हैं। मगर यह बड़ी अच्छी बात है कि यह रिवाज अब कम होता जा रहा है।

: ३१ :

## रामायण और महाभारत

वेदों के जमाने के बाद काव्यों का जमाना आया। इसका यह नाम इसलिए पड़ा कि इसी जमाने में दो महाकाव्य, रामायण और महाभारत, लिखे गए, जिनका हाल तुमने पढ़ा है। महाकाव्य उस पद्य की बड़ी पुस्तक को कहते हैं, जिसमें वीरों की कथा बयान की गई हो।

काव्यों के ज़माने में आर्य लोग उत्तरी हिन्दुस्तान से विंध्य पहाड़ तक फैल गए थे। जैसा मैं तुमसे पहिले कह चुका हूँ इस मुल्क को आर्यावर्त कहते थे। जिस सूबे को आज हम संयुक्त प्रदेश कहते हैं वह उस जमाने में मध्य देश कहलाता था, जिसका मतलब है बीच का मुल्क। बंगाल को बंग कहते थे।

यहाँ एक बड़े मजे की बात लिखता हूँ जिसे जान कर तुम खुश होगी। अगर तुम हिन्दुस्तान के नक़शे पर निगाह डालो और हिमालय और विंध्य पर्वत के बीच के हिस्से को देखो, जहाँ आर्यावर्त रहा होगा तो तुम्हें वह दूज के चाँद के आकार का मालूम होगा। इसीलिए आर्यावर्त को इन्दु देश कहते थे। इन्दु चाँद को कहते हैं।

आर्यों को दूज के चाँद से बहुत प्रेम था। वे इस शक्ल की सभी चीज़ों को पवित्र समझते थे। उनके कई शहर इसी शक्ल के थे जैसे बनारस। मालूम नहीं तुमने खयाल किया है या नहीं, कि इलाहाबाद में भी गंगा भी दूज के चाँद की सी हो गई है।

यह तो तुम जानती ही हो कि रामायण में राम और सीता की कथा, और लंका के राजा रावण के साथ उनकी लड़ाई का हाल बयान किया गया है। पहिले इस कथा को वाल्मीकि ने संस्कृत में लिखा था। बाद को वही कथा बहुत सी दूसरी भाषाओं में लिखी गई। इनमें तुलसीदास का हिन्दी में लिखा हुआ रामचरितमानस सबसे मशहूर है।

रामायण पढ़ने से मालूम होता है कि दक्खिनी हिन्दुस्तान में बन्दरों ने रामचद्र की मदद की थी और हनुमान उनका बहादुर सर्दार था। मुमकिन है रामायण की कथा आर्यों और दक्खिन के आदमियों की लड़ाई की कथा हो, जिनके राजा का नाम रावण रहा हो। रामायण में बहुत सी सुन्दर कथायें हैं; लेकिन यहाँ मैं उनका जिक्र न करूँगा, तुमको खुद उन कथाओं को पढ़ना चाहिए।

महाभारत इसके बहुत दिनों बाद लिखा गया। यह रामायण से बहुत बड़ा ग्रंथ है। यह आर्यों और दक्खिन के द्रविड़ों की लड़ाई की कथा नहीं; बल्कि आर्यों के आपस की लड़ाई की कथा है। लेकिन इस लड़ाई को छोड़ दो, तो भी यह बड़े ऊँचे दरजे की किताब है जिसके गहरे विचारों और सुन्दर कथाओं को पढ़कर आदमी दंग रह जाता है। सबसे बढ़ कर हम सब को इसलिए इससे प्रेम है कि इसमें वह अमूल्य ग्रंथ रत्न है जिसे भगवद्गीता कहते हैं।

ये किताबें कई हजार बरस पहिले लिखी गई थीं। जिन लोगों ने ऐसी-ऐसी किताबें लिखीं वे जरूर बहुत बड़े आदमी थे। इतने दिन गुजर जाने पर भी ये पुस्तकें अब तक जिंदा हैं, लड़के उन्हें पढ़ते हैं और सयाने उनसे उपदेश लेते हैं।

मुद्रक और प्रकाशक
जे० के० शर्म्मा, इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस
इलाहाबाद